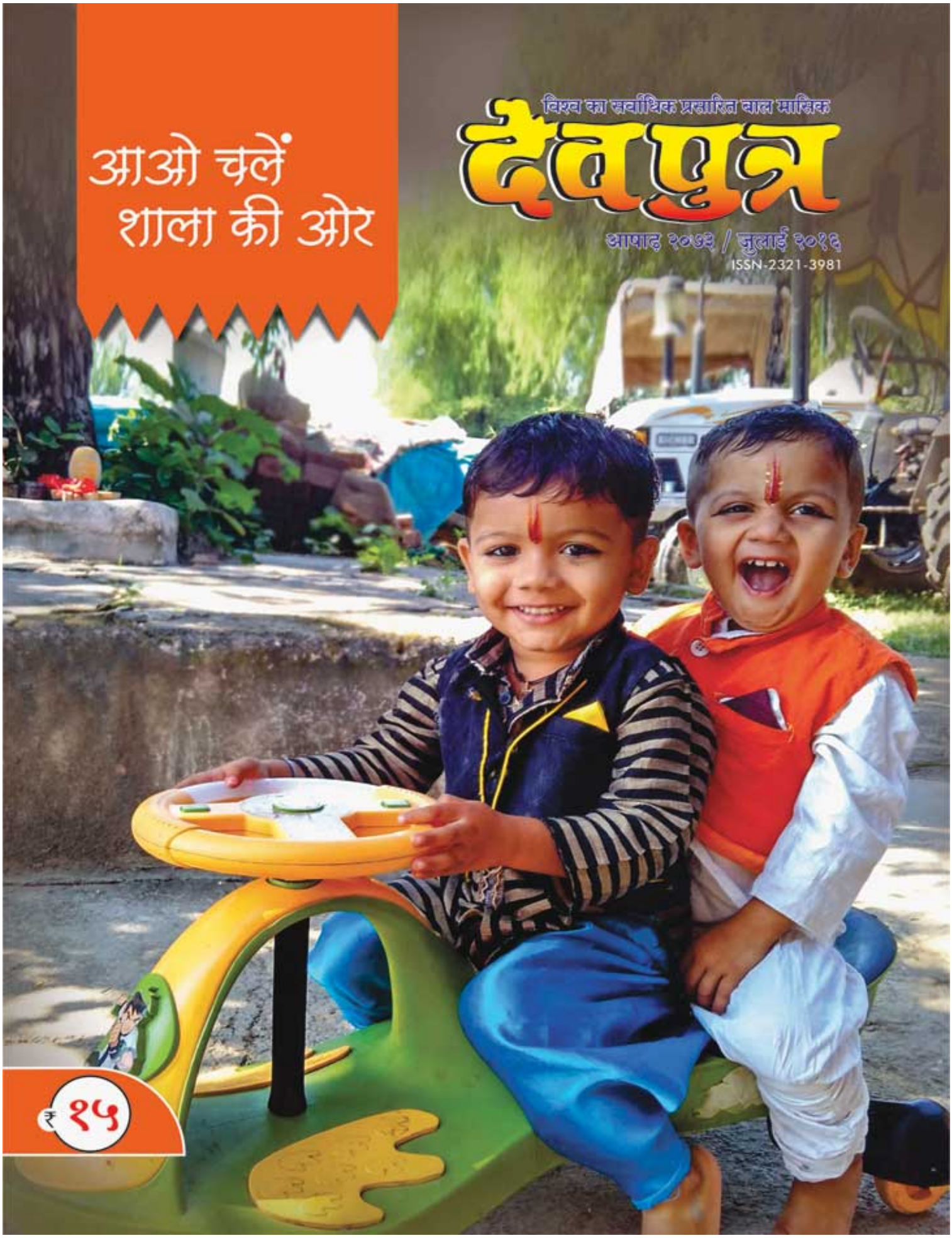

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

आषाढ २०७३ / जुलाई २०१६
ISSN-2321-3981

₹ १५

दृष्टि The Vision

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

Online Test Series

For Preliminary Exam-2016

Get yourself prepared for 7th August, 2016

General Studies & CSAT

Starts from: 24th January, 2016

First test Free for all students

For More Details visit: drishtiias.com

दृष्टि The Vision

करेंट अफेयर्स टुडे

महत्त्वपूर्ण लेख

- सीरिया में शह और मात का खेल
- ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस में भारत की स्थिति
- नेट न्यूट्रैलिटी का महत्त्व
- सरोगेसी के विनियमन से जुड़े प्रश्न
- करेंसी वॉर : एक नवीन वैश्विक आर्थिक संघर्ष

रणनीतिक आलेख

- मुख्य परीक्षा में उत्तर कैसे लिखें?

एथिक्स एवं वाद-विवाद

- कार्ल मार्क्स के नैतिक विचार
- भारत में बढ़ती असहिष्णुता

टॉपर्स से बातचीत

- मनीष कुमार वर्मा
- डॉ. विभोर अग्रवाल

मुख्य परीक्षा विशेषांक

- सामान्य अध्ययन के चारों प्रश्नपत्रों का 12 खंडों में वैज्ञानिक वर्गीकरण एवं प्रत्येक खंड पर इस वर्ष की मुख्य परीक्षा के लिये महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
- इन प्रश्नोत्तरों के माध्यम से सिर्फ 7 दिनों में पूरे सामान्य अध्ययन का त्वरित रिविज़न

और भी बहुत कुछ....

विभिन्न राज्यों से जुड़े
हिंदी माध्यम के IAS टॉपर
क्या कहते हैं इस पत्रिका के बारे में...

राजेन्द्र पैंसिया
IAS- उ.प्र. कैडर

"हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि पत्रिका कौन सी पढ़ी जाए? इसके लिये सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, प्रामाणिक और सारगर्भित स्रोत 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' के माध्यम से मिलता है। इंटीग्रेटेड एप्रोच से तैयारी के लिये हिंदी माध्यम में ऐसी किसी पत्रिका का अभाव था जो प्रिलिम्स, मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार की ज़रूरतों को पूरा कर सके। विकास सर के मार्गदर्शन में यह पत्रिका निश्चित ही इन सभी मानकों पर खरी उतरती है। हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी गुणात्मक ट्रांसलेटेड मैटीरियल पढ़ने की बजाय यह पत्रिका पढ़ें जो पूर्णतः मौलिक व अनुभवी टीम की मेहनत का परिणाम है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका उनके लिये निश्चित रूप से वरदान साबित होगी। शुभकामनाएँ।"

Available at your nearest book shop

वितरण और विज्ञापन के लिए संपर्क करें–
(+91) 8130392355

FOR DAILY CURRENT AFFAIRS UPDATE Visit at www.drishtiias.com

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 Contact : 011-47532596, (+91) 8130392354-56-57-59

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

आषाढ़ २०७३ ▪ वर्ष ३७
जुलाई २०१६ ▪ अंक १

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

इस मास के अंत में जन्मदिन मनाकर एक क्रांतिवीर का स्मरण करेंगे। सभी प्रकार से अद्‌भुत और विलक्षण क्रांतिवीर नाम था चन्द्रशेखर आजाद। आजाद रहने की प्रतिज्ञा वह सहज और बिना किसी गम्भीर विचार विमर्श के कर बैठा था और वह भी १४ वर्ष की कच्ची आयु में। किंतु निभाया उसे अपनी सम्पूर्ण दृढ़ता और कठोरता के साथ। अलफ्रेड पार्क इलाहाबाद २७ फरवरी १९३१ की उस घटना का साक्षी है जब वह अंग्रेज पुलिस के कप्तान नॉट बाबर और भारतीय पुलिस अधिकारी विश्वेश्वर को अपनी पिस्तोल की २ गोलियों से उड़ाकर तीसरी और अंतिम गोली अपने सीने में उतारता हुआ बड़बड़ा रहा था- 'आजाद ही रहे हैं आजाद ही रहेंगें।'

चन्द्रशेखर आजाद की पढ़ाई लिखाई किसी विद्यालय और महाविद्यालय में नहीं हुई। किसी विश्वविद्यालय से उन्हें कोई डिग्री नहीं मिली। किन्तु आज जिस विषय को लेकर शिक्षा जगत भटक रहा है उस Man Making Education (मनुष्य निर्मात्री शिक्षा) के वे विशेषज्ञ थे।

अपने सहयोगी क्रांतिकारी भगतवीचरण बोहरा की मृत्यु एक स्वनिर्मित बम के परीक्षण के दौरान आकस्मिक रूप से हो गई। उनकी पत्नी और क्रांतिजगत में विख्यात दुर्गा भाभी अपने छोटे से बेटे का लालन-पालन अपने प्रकार से कर रही थी। एक दिन, कंधे पर प्रायः लटके रहने वालो झोले के साथ आजाद वहां एकाएक पहुंच गए और बेटे के हाल चाल जानने के बाद उसे अपने पास बुलाया। बोले'' बेटा देखो, मैं आज तुम्हारे लिए कितने खिलौने लाया हूं?'' और थेले से निकालकर तमंचा, पिस्तोल अनेक आकार के और अनेक प्रकार के उसके सामने ढेर लगा दिए।

दुर्गा भाभी खोई-खोई सी देख रही थी और आजाद कह रहे थे। भईया की मृत्यु का बदला लेने के लिए इन्ही खिलौने से तो खेलने का अभ्यास कराना होगा बेटे को।'

आँखों से दो बूंद ढुलकी और फिर सब कुछ सामान्य हो गया। भाभी जानती थीं कि पति के अधूरे स्वप्नों को पूरा करने के लिए पुत्र का निर्माण कैसे करना होगा?

स्वामी विवेकानंद के अनुसार जब Man Making हमारा Life Mission यानी मनुष्य निर्माण हमारा जीवन ध्येय बनेगा तभी हमें सफलता मिल सकेगी।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- आई वर्षा नाचा मोर – अरविन्द कुमार साहू ०५
- कल्लू और सफेदा बादल– नरेन्द्र देवांगन ११
- बोझ उतर गया – डॉ. दर्शनसिंह आशट १४
- मोर के मोजे – डॉ. लक्ष्मीनारायण खन्ना २०
- प्रधान गुरुजी हाथीराम – विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी ३४

प्रसंग

- गुरु गोविन्द सिंह का... – डॉ. कृष्णचन्द्र तिवारी २४
- मुझे भी गुरु बनना है – डॉ. सुभाष बुड़ावनवाला ४०

बाल लोककथा

- तूने मुझे लात क्यों मारी डॉ. गजेन्द्र आर्य २५

कविता

- मुस्काए शाला के आंगन – डॉ. पत्यूष गुलेरी ०९
- बच्चे फिर स्कूल चले – रूद्रप्रकाश गुप्त 'सरस' ०९
- मुंशी प्रेमचंद – शुभदा पाण्डेय १६
- बाल गंगाधर तिलक – डॉ. जयंत निर्वाण १८
- आ गई जुलाई – रामकिशोर शुक्ला २६
- गुड़िया के पेट – राजेन्द्र निशेश ३१
- बरसात आई – कुसुम खरे 'श्रुति' ३२
- जीवन सुलेख – डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल ३६
- स्वच्छता – रमेशचन्द्र पंत ३६
- फतह – भगवती प्रसाद द्विवेदी ४१
- भालूराम बने हज्जाम – ओम उपाध्याय ४३

चित्रकथा

- दादाजी का नाम – देवांशु वत्स ३७
- नोट्स का कमाल – देवांशु वत्स ३९

स्तंभ

- हमारे राज्य पुष्प डॉ. परशुराम शुक्ल १९
- पुस्तक परिचय --- ३०
- आपकी पाती --- ४०

एवं ढेरों मनोरंजक व ज्ञानवर्धक सामग्री

बाल प्रस्तुति

- सबसे अच्छा मेरा गांव – शिवप्रताप सिंह ठाकुर २२
- तीन मित्र – पुलकित जैन २७
- बताओ जरा – शिवम् कुमार दीवान ३१
- बारिश – निकिता परमार ४८
- दिमाग पर जोर – शैलेश नामदवने ३३

आई वर्षा नाचा मोर

कहानी : अरविन्द कुमार साहू

बहुत पहले की बात है, एक बार धरती पर भीषण सूखा पड़ा। बहुत दिनों तक वर्षा न होने से पानी की भारी किल्लत हो गई। नदी और तालाब सूखने लगे। हरियाली गायब होने लगी। फसलें सूख गईं। जीव-जन्तु प्यासे मरने लगे। खाने-पीने की वस्तुओं का अकाल पड़ गया। लगने लगा कि धरती से जीवन का नमोनिशान ही मिट जाएगा। तब धरती के बेचैन जीव-जन्तुओं ने एक आपातकालीन महासभा बुलाई। पहाड़ की तलहटी में स्थित एक विशाल सूखी हुई झील पर सब इकट्ठे हो गए।

दुबले पतले हो चले महाराज शेरसिंह ने सभा की अध्यक्षता करते हुए कहा-''प्रिय धरतीवासियो! इस भीषण अकाल से हम सबका अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। लगता है बादलों के देवता हमसे रुष्ट हो गए हैं। हमें किसी भी प्रकार से उन्हें मनाना ही होगा। अन्यथा वर्षा के अभाव में सब कुछ समाप्त हो जाएगा।''

हाथी बोला-''शेरसिंह जी! मैंने तो कमल का फूल सूंड में उठाकर महीनों तपस्या की। लेकिन बादलों के देवता प्रसन्न नहीं हुए।''

एक मेंढक उछल कर सामने आया, बोला-''महाराज! मैंने तो कीचड़ में खूब काल-कलौटी खेली। खूब मनाया, विनती की, पर वे पसीजे तक नहीं।''

चिड़ियों में से एक टिटिहरी उड़कर नजदीक आई-'' महाराज! मैंने तो सोचा कि समुद्र से जल लाकर सभी झीलों को भर दूँ, किन्तु मेरी चोंच में जितना जल

आता है वह रास्ते में ही सूख जाता है।''

टिटिहरी की बात पर एक जोर का ठहाका गूंजा। गिद्ध बोला– ''लो भई, सूप तो सूप अब चलनी भी बोलने लगी।''

इस पर शेर सिंह गम्भीर हो गए–''आपका हंसना अपनी जगह है। पर क्या आपने भी इस टिटिहरी की तरह कोई गम्भीर प्रयास किया? इस गम्भीर जल संकट से निपटने के लिए कुछ सोचा है?''

गिद्ध सिटपिटा कर चुप हो गया। तब एक सुन्दर तितली मंडराती हुई आगे आई और बोली– ''महाराज, छोटा मुंह, बड़ी बात। मुझे लगता है कि बादलों के देवता गहरी नींद में सो गए हैं। तभी उन्हें किसी की प्रार्थना सुनाई नहीं दे रही है। किसी को बादलों के नगर में जाकर उन्हें जगाना चाहिए, ताकि वो हमारी विपदा सुने और समझ सकें। वे बहुत अच्छे हैं। वर्षा जरूर करेंगें।''

महाराज की आँखों में आशा की एक किरण कौंधी–''वाह तितली रानी! तुम्हारा शरीर जितना सुन्दर है, मन में विचार भी उतने ही अच्छे हैं। हमें यह बात पहले क्यों नहीं सूझी?''

तितली फिर बोली–''किन्तु महाराज! बादलों का नगर तो बहुत दूर है। सात समंदर पार, ऊँची पहाड़ियों के भी बहुत ऊपर। वहाँ कोई पहुँचेगा कैसे?''

शेरसिंह बोले– ''किसी को तो जाना ही पड़ेगा। मैं तो उड़ भी नहीं सकता वरना अभी चल देता।

हाथी बोला–''महाराज यह तो किसी चतुर सुजान पक्षी के ही वश का है। बोलिए! आप में से कौन यह यात्रा तय करेगा ?''

हर तरफ सन्नाटा छा गया। हर कोई अपनी ही कमजोरी बताने लगा। शेरसिंह फिर निराश हो उठे। बोले– ''क्या यह यात्रा कोई नहीं कर सकता? बादलों तक कोई संदेश नही ले जा सकता?''

कुछ देर तक कोई नहीं बोला। तब सबसे पीछे से एक अनजान–सा बेडौल और थोड़ा भारी शरीर वाला एक पक्षी उठकर धीरे–धीरे आया। बोला महाराज। मैं जाना चाहता हूँ। मेरा शरीर कमजोर है, पर मन में अपार ऊर्जा का संचार हो रहा है। मैं धरतीवासियों के लिए चाहे जैसे भी हो बादलों के राजा तक जरूर पहुंचूंगा, यह मेरा संकल्प है। मुझे आज्ञा दीजिए।''

सभी जीव प्रसन्न हो गए। सबने एक स्वर में कहा– ''हम सबकी दुआएं तुम्हारे साथ है।''

महाराज ने आज्ञा दे दी–''ठीक है जाओ, बादलों के राजा सबका कल्याण करेंगे।''

पंछी ने पूरी ताकत लगा कर पहले दौड़ लगाई, फिर धीरे–धीरे आकाश में उड़ चला। झील पार हुई, जंगल पार हुए, समुद्र भी जैसे तैसे वह पार ही कर गया। सचमुच वह मरगिल्ला सा अनजान पक्षी संकल्प का बेहद धनी था। आत्मिक ऊर्जा से सराबोर। पहाड़ों की कठिन चढ़ाई भी शुरु कर गया। चढ़ता गया। उड़ता गया, भूख–प्यास और थकान से बेहाल। ऊपर से भीषण गर्मी का कहर। उसका शरीर पहले से पसीने से लथपथ हुआ, फिर गर्मी में जलन बढ़ने लगी। कई बार तो उसे लगा कि अब उसके प्राण प्रखेरू ही उड़ जाएंगे। पर वह निराश नहीं हुआ। जितनी बार सामने दृष्टि उठाकर देखता, बादलों के राजा का नगर और पास दिखने लगता। वह ऊर्जा से लबालब होकर और ऊँचा उड़ने की कोशिश करता। पर गर्मी थी कि उसकी दौड़ से होड़ लगा रही थी। उसके इरादों को जला कर राख कर देना चाहती थी। लेकिन पक्षी जानता था कि एक बार वह कैसे भी अपने लक्ष्य तक पहुँच गया तो उसके साथ ही धरतीवासियों की तकलीफें भी दूर हो जाएंगी। उसने हार न मानने की ठान ली थी। भीषण गर्मी ने उसके पंख जलाने शुरु कर दिए थे। उसे लगा कि यहीं भस्म होकर रह जाएगा। अब बादलों के राजा का महल सामने ही था, किन्तु उसके पंख बुरी तरह जलने लगे थे। लगा कि सारी मेहनत बेकार चली जाएगी। उसने पूरी ताकत से आखिरी कोशिश की। महल के ऊपर आते–आते उसके पंखों ने आग पकड़

ली। वह मूर्छित होने लगा। उसका शरीर बुरी तरह जल उठा था। अन्तिम समय जान उसने बची हुई पूरी ताकत समेटी और उड़ने की कोशिश की, लेकिन आगे न उड़ सका। नीचे गिरने लगा। उसे लगा कि अब वह धरतीवासियों का सपना कभी पूरा नहीं कर पाएगा। भीषण जलन से उसकी आंखें बन्द हो गईं थीं। वह देख–समझ नहीं सकता था कि वह कहाँ गिर रहा है।

जब उसकी आँख खुली तो उसने अपने आपको बादलों के खूब मुलायम बिस्तर में पाया। मन को बेहद सुकून देने वाली ठंडक के बीच। बादलों के ही बने सुन्दर नौकर–चाकर उसकी सेवा में जुटे थे। उसके पंखों की मरहम पट्टी हो चुकी थी। बादलों की रानी उसे मीठा और सुगन्धित शरबत पिला रही थी। जिसके मुँह में जाते ही उसे होश आया था और उसके शरीर की सारी जलन छूमन्तर हो गई थी। अब उसने सिर उठाकर सामने ध्यान से देखा तो बादल के राजा को उनके सिंहासन पर बैठा पाया। सांवले–सलोने, सफेद दाढ़ी मूंछों वालें, सिर पर चाँदी का मुकुट, रूई के जैसे बादलों से बने सफेद मुलायम राजसी वस्त्र पहने हुए। उनके चारों और बादलों की भाप से बने सेवक–सेविकाएँ सेवा में जुटे थे। हर तरफ बस बादल ही बादल। बीच–बीच में हवा के ठंडे झोंके असीम सुख का आनन्द दे रहे थे। पक्षी को लगा कि वह स्वर्गलोक में पहुँच गया है।

बादलों के राजा अत्यंत सुन्दर और गरिमामय लग रहे थे। उन्हें प्रणाम करते हुए पक्षी ने चकित भाव से पूछा–''महाराज! क्या मैं स्वर्ग में भी जीवित हूँ?''

उसकी बात सुनते ही बादलों के राजा ठठा कर हंस पड़े। बादलों की हल्की गर्जना जैसे स्वर में बोले–''हाँ, तुम जीवित हो, किन्तु बादलों के राजा घननाद के महल में। ये भी किसी स्वर्ग से कम नही हैं। वैसा ही सुन्दर, वैसा ही आनन्ददायक। तुम बहुत दूर धरती से चलकर आए हो, थके और घायल भी हो। पहले खूब आराम करो, खाओ पियो, स्वस्थ हो जाओ फिर आराम से बातें करेंगे।''

धरती का नाम आते ही पक्षी पूरी तरह चैतन्य हो उठा। उसे उसका उद्देश्य याद आ गया। वह अपने कष्ट और आराम की तुलना धरतीवासियों से कर के व्याकुल होने लगा।

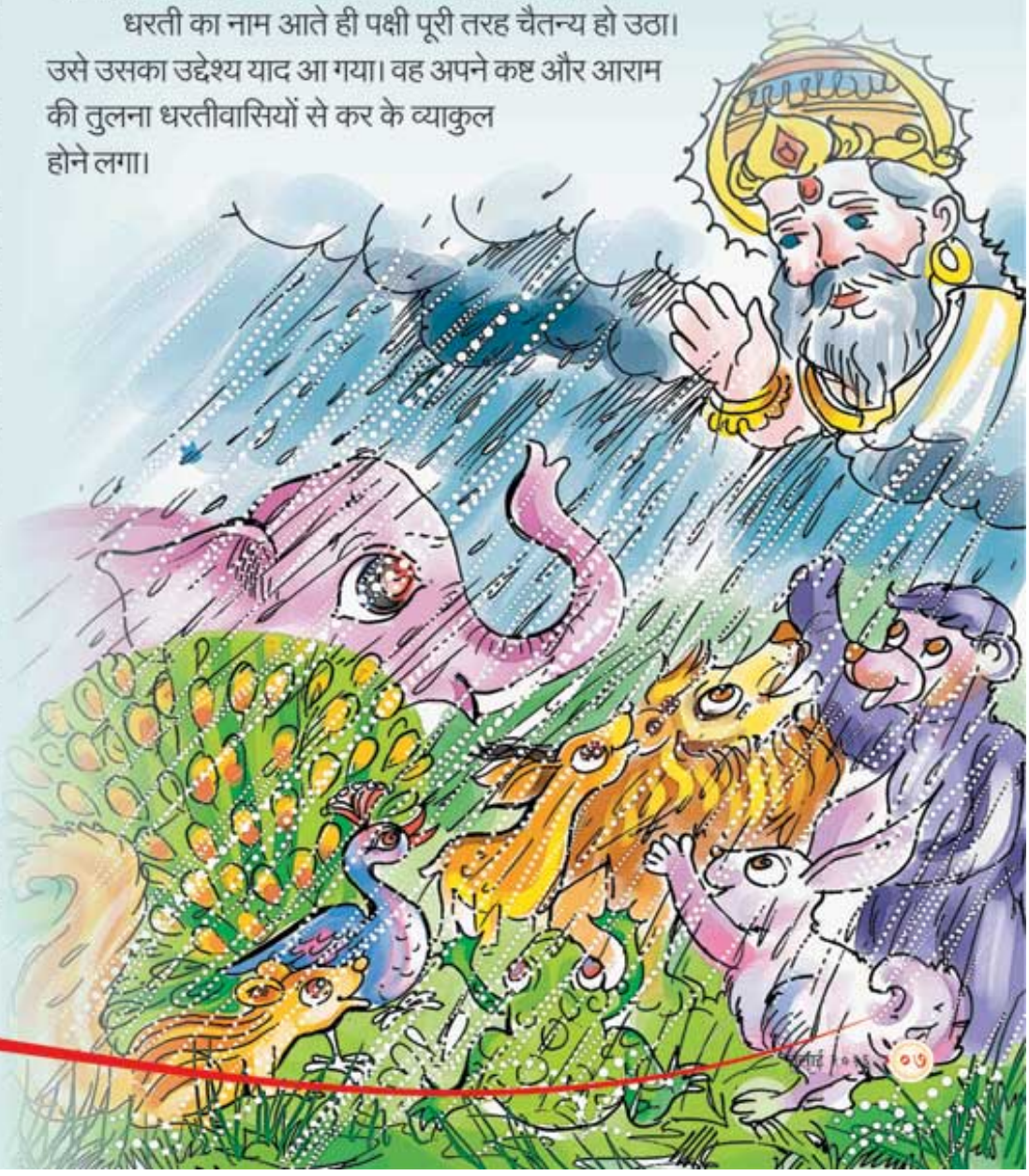

घननाद ने पूछा–''तुम बहुत अधिक चिन्तित क्यों हो?''

पक्षी ने धरती के सूखे और अकाल के बारे में विस्तार से बताया। कहा–''महाराज! आपकी कृपा से बिना धरती का जीवन नष्ट हो जाएगा। पहले मेरा कार्य सम्पूर्ण करें, तभी मुझे आराम करना अच्छा लगेगा।''

पक्षी की व्याकुलता देखकर घननाद की आँखें नम हो गई। वे बोले–''तुम चिन्ता मत करो। तुम्हारे जैसे परोपकारी जीवों के होते हुए धरती सदा हरी भरी ही रहेगी।''

उन्होंने तत्काल मेघों की सेना को आदेश दिया–''जाओ, पूरी धरती को सींच दो, जलाशयों को तरोताजा और नदियों को सदावाहिनी कर दो।'' मेघों की सेना गरजते हुए चल पड़ी।

पक्षी को बहुत सुकून मिला। उसने घननाद से विनती की–''महाराज! मुझे भी जाने की आज्ञा दें। धरतीवासियों को यह खुशी प्रदान करके आपने मुझे भी स्वर्ग का सम्पूर्ण आनन्द दे दिया है। वास्तव में अपने लोगों की खुशी देखकर व उनकी खुशी का हिस्सा बनकर स्वर्ग से भी अधिक आनन्द मिलेगा।''

घननाद अत्यंत प्रसन्न हो उठे–''तुम धन्य हो पक्षी! किन्तु मैं तुम्हें अपने राज्य से खाली हाथ नही जाने दूंगा। आज से तुम धरती पर मेरा मुकुट धारण करोगे और पक्षी राज मयूर कहलाओगे। मैं तुम्हें तुम्हारी मन की सुन्दरता की ही तरह तन की सुन्दरता भी प्रदान करता हूँ।''

घननाद ने सिंहासन से उठकर पक्षी पर स्नेह से हाथ फेरा। देखती ही देखते वह अत्यंत सुन्दर पक्षी ''मयूर'' में परिवर्तित हो गया। घननाद का मुकुट मयूर के सिर पर कलगी बनकर हमेशा के लिए सज गया। उन्होंने मयूर को आशीर्वाद देते हुए कहा–''जाओ! प्रसन्नचित रहो। तुम से सुन्दर पक्षी धरती पर कोई नहीं होगा। इन्द्रधनुष के सारे रंग तुम्हारे पंखों में सजेंगे। सब तुम्हारी प्रशंसा करेंगे। तुम्हें मेरा कृपा पात्र भी मानेगे, तुम्हें हर तरह का सम्मान मिलेगा।''

घननाद ने इंद्रधनुष को आदेश दिया–''पक्षी राज मयूर को धरती तक छोड़ आओ।''

इन्द्रधनुष तुरन्त खिल उठा। सतरंगी छटा बिखेरते हुए स्वर्ग से धरती के छोर तक पहुँच गया। पक्षीराज अपने नए नवेले रूप के साथ इन्द्रधनुष पर सवार होकर आराम से फिसलते हुए धरती पर आ पहुँचे।

झील के किनारे प्रसन्नचित्त जीव–जन्तु उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनका स्वागत सत्कार होने लगा। अब तक बादलों ने भी मोर्चा सम्भाल लिया था। गरज के साथ वर्षा की फुहारें धरती को भिगोने लगी थी। सारे धरतीवासी नाच उठे। महाराज शेर सिंह ने भी मयूर को पक्षियों का राजा घोषित कर दिया। इतना अधिक सम्मान पाकर पक्षीराज अभिभूत हो उठे। वर्षा की फुहारों ने जलतरंग पर साज छेड़ दिया, मेघों ने मल्हार राग छेड़ा, हवा ने बांसुरी से तान छेड़ी, मेढकों ने डफली बजा दी, झींगुरों ने झनकार मारी, हाथी ने चिंघाड़ लगाई तो शेरसिंह भी खुशी से दहाड़ मार का दौड़ने लगे। हिरनों ने चौकड़ी भरनी शुरु कर दी। कोयल गीत गाने लगी और भौंरे गुनगुनाने लगे। झील में कमल दल फिर खिल उठे। धरती पर हरियाली छाई तो उत्सव होने लगे। अपने परिश्रम का फल पाकर पक्षीराज ने भी अपने सतरंगे पंख फैला लिए। उनका मस्त मन मयूर नाच उठा। आखिर वे धरती के पहले मोर थे और एक मिसाल बन गए थे।

आज भी जब–जब धरती पर सूरज की गर्मी बढ़ती है, पक्षी राज मयूर ''पींव–पींव'' की मधुर पुकार से बादलों के राजा घननाद को पुकारने लगते हैं। तब फिर बादल आते हैं और वर्षा की फुहारें सारी धरती को भिगोकर शीतल कर देती है। प्रत्येक प्राणी का मन ''मयूर'' नाचते लगता है।

● ऊंचाहार (उ.प्र.)

बच्चे फिर स्कूल चले

कविता : डॉ. हरीश निगम

सैर सपाटे भूल चले,
बच्चे फिर स्कूल चले।
छुट्टी वाले
दिन खर्चे
शुरु पढ़ायी
के चर्चे
आलस पर दे धूल चले,
बच्चे फिर स्कूल चले।

कक्षा नई
नए बस्ते
नन्हें-मुन्ने
गुलदस्ते
हंसते-गाते फूल चले,
बच्चे फिर स्कूल चले।

रंगों का
रेला बच्चे
खुशियों का
मेला बच्चे
तन-मन झूला झूल चले
बच्चे फिर स्कूल चले।

● सतना (म.प्र.)

मुस्काए शाला के आंगन

कविता : हरीश दुबे

देख देख बच्चे मनभावन
मुस्काए शाला के आंगन
भोली-भाली हंसी फूल सी
जैसे महका महका उपवन
मीठे मीठे शब्द झरे यूं
रिमझिम जैसे बरसे सावन
एक से सबने कपड़े पहने
एक ही रहना कहते गुरूजन
माटी भी जिसकी चंदन है
ऐसा अपना देश है पावन

● महेश्वर(म.प्र.)

कल्लू और

कल्लू और सफेदा में गहरी दोस्ती थी। लेकिन दोनों का मिलना कम ही होता था, क्योंकि कल्लू वर्षा के मौसम में ही आता था जबकि सफेदा हर मौसम में घूमता रहता था। दोनों जब भी मिलते, खूब बातें करते।

एक दिन वर्षा के दिनों में बिना पानी वाला हल्का–फुल्का सफेदा बादल नीले आसमान में उड़ा जा रहा था। आकाश में उड़ता हुआ वह नीचे धरती के नजारे देखने में खो गया। धरती के निवासी बरसात का इंतजार में आकाश में उड़ रहे बादल को उम्मीद से देख रहे थे।

तभी दूर से उसे कल्लू आता दिखाई दिया। वह तुरंत उसके पास पहुंचा और बोला– ''दोस्त, इस बार बहुत दिन बाद दिखाई दिए, क्या बात है?''

''हाँ सफेदा, मुझे इस बार पानी लाने बहुत दूर जाना पड़ा क्योंकि प्रदूषण की वजह से पास वाले समुद्र में सूरज की किरणें अपना असर नहीं दिखा पा रही थीं। इसलिए भाप नहीं बनी और मुझे आगे जाना पड़ा।'' कल्लू ने उदास होकर कहा।

''हाँ कल्लू, बात तो तुम्हारी ठीक है। इस प्रदूषण ने तो पृथ्वी का संतुलन ही बिगाड़ना शुरु कर दिया है। पता नहीं क्या होगा पृथ्वी का।'' सफेदा बोला।

''अच्छा सफेदा, फिर मिलते हैं। मुझे जल्द ही एक ऐसी जगह पर पहुंचना है, जहाँ मेरी बहुत जरूरत है।'' कल्लू ने चलते–चलते कहा।

''जरूरत?'' सफेदा हैरानी से बोला।

''हाँ जरूरत, बेचारे किसान जी तोड़ मेहनत करते हैं। अगर मैं समय पर न बरसूं तो न जाने उनका क्या हो?'' कल्लू ने कहा।

''तो ठीक है, कल्लू भैया! मैं भी आज तुम्हारे साथ चलूंगा।'' इतना कहकर सफेदा भी कल्लू के साथ तेजी से उड़ चला।

सफेदा बहुत तेजी से आगे निकल गया। लेकिन कल्लू भारी होने की वजह से धीरे–धीरे चल रहा था। आगे सफेदा ने देखा, धरती पर कुछ किसान सिर पर हाथ धरे उदास बैठे हैं।

उनमें से एक छोटा बच्चा दीपू सफेदा को देखकर चिल्लाया–''पिताजी! देखो बादल। लगता है अब जोर से बारिश होगी। हमारे खेत हरे–भरे हो जाएंगे।''

''नहीं बेटे! बारिश बरसाना इस बादल के बस में नहीं है। ये बादल आवारा की तरह यहाँ–वहाँ डोलते रहने वाले बादल हैं, बेकार और नाकारा।'' अनुभवी पिता ने बेटे से कहा।

खुद को नाकारा और बेकार बताए जाने से सफेदा को गुस्सा आया। उसका मन हुआ कि ढेर सारा पानी बरसा कर अपनी उपयोगिता सिद्ध कर दे पर उसकी

सफेदा बादल

कहानी : नरेन्द्र देवांगन

कोशिश बेकार गई। बादल में पानी होता तो बरसता। उसके साथ तो पानी की एक भी बूंद नहीं थी।

तभी हांफता हुआ कल्लू आ गया। किसानों के मुरझाए चेहरे खुशी से खिल उठे। वे नाचने लगे।

दीपू के पिताजी ने कहा–'' दीपू बेटा, देखो यह काला बादल हमारे काम का है। अब पानी जरूर बरसेगा। यह बादल असली वाला है। उस सफेद वाले की तरह नाम का बादल नहीं है।''

यह सुनकर सफेदा जलभुन गया। वह गुस्से से कल्लू की ओर देखने लगा। लेकिन कल्लू तो खुशियां लुटाने में लगा हुआ था। वह किसानों के खिले चहरे देखकर और भी गरज–गरजकर बरसने लगा।

कल्लू को पता ही नहीं चला कि कब सफेदा उससे रूठकर दूर चला गया है। बाद में कल्लू ने उसे खूब ढूंढा, पर वह नहीं मिला।

कल्लू से जलाभुना सफेदा कई दिन तक इधर–उधर घूमता रहा। वह घूम–घूमकर खुशियां तलाशता रहा। पर कोई देखकर खुश नहीं हुआ। आखिर एक दिन कल्लू ने उसे ढूंढ ही लिया।

उसने सफेदा को पुकारा–''सफेदा! ओ सफेदा!! मेरे दोस्त, क्या बात है नाराज हो गया?''

सफेदा ने कुछ कहने के बजाय मुंह फेर लिया। कल्लू ने तेजी से आगे बढ़कर उसका रास्ता रोका और कहा–''मैं समझ रहा हूँ मेरे दोस्त कि तुम मुझसे नाराज हो। लेकिन यह मत भूलो कि समय आने पर ये लोग मुझे भी भला–बुरा कहने से नहीं चूकते।''

''लेकिन दोस्त, तुमने खुद देखा और लोगों की बातें भी सुनी कि वे मुझसे किस तरह नफरत करते हैं। सफेदा ने उदास स्वर में कहा।

कल्लू ने सफेदा का हाथ पकड़ा और कहा– ''हाँ, मैंने देखा और सुना। पर मेरे दोस्त यह मत भूलना कि जब लोगों को पानी की जरूरत नहीं होती तब वे मुझसे भी नफरत करने लग जाते हैं और उस समय सफेदा भाई! तुम उन्हें अच्छे लगते हो।''

कल्लू की बात से सफेदा को थोड़ी शांति मिली। इतने में हवा का एक जोरदार झोंका आया। कल्लू के हाथ से सफेदा का हाथ छूट गया। कल्लू हवा के साथ बह चला।

बहते–बहते वह चिल्लाकर कहने लगा–''सफेदा, अपने मन में ईर्ष्या मत पालना। हमेशा दूसरों की भलाई की बात सोचना। चाहे कोई कुछ भी कहे, हमें हमेशा अपने काम और जिम्मेदारी को याद रखना हैं।''

इतना कहकर कल्लू नजरों से ओझल हो गया।

● खरोरा (छ.ग.)

शब्दक्रीडा(१९)

दस गुरु

बच्चो! हमारे देश में गुरु शिष्य परम्परा का इतिहास अत्यंत गौरवपूर्ण एवं समृद्ध रहा है। हिन्दु धर्म का ही एक अंग सिक्ख पंथ तो गुरुपरम्परा से ही जाना जाता है। इसके प्रथम गुरु १४६९ में हुए एवं दसवें गुरु तक चली आ रही इस परम्परा ने इन दशमेश की आज्ञा से ही एक नया रूप ले लिया और श्री गुरु ग्रंथ साहिब को सर्वोच्च गुरु पद पर प्रतिष्ठित किया गया। इसे आदि ग्रंथ भी कहा गया। इसमें सिक्ख पंथ के समस्त गुरु साहिब की दिव्य वाणी के साथ-साथ अनेक भक्त कवियों, संतों एवं महापुरुषों की श्रेष्ठ उपदेशपरक वाणी का संकलन है। इसका संकलन पांचवें गुरु ने ही करना आरंभ कर दिया था। इसमें अनेक परवर्ती गुरुओं की वाणी भी सम्मान स्वरूप प्रथम गुरु के नाम से सम्मिलित की गई।

शब्द क्रीड़ा में इस माह आपको ढूंढना है इन दस गुरु साहिबान के नाम। सही क्रम से दस नाम खोजने वाला उत्तम बुद्धि तथा आठ व पांच नाम खोजने वाला क्रमशः मध्यम और सामान्य बुद्धि समझा जाएगा। (सही उत्तर इसी अंक में)

ना	सिं	कि	ह	न	न्द	अं	बि	ब	ब	र
न्द	न	ना	ग	ह	ग	दु	दे	हा	ह	अं
बि	श	क	य	द	हा	ग	अं	र	ग	ना
अ	र्जु	न	दे	व	र	रा	गो	द	ह	म
श	अं	व	दा	व	द	बि	ह	र	र	क
गो	न	ग	य	स	न्द	ते	रा	ते	कि	रा
अ	क	म	कि	सिं	ह	ग	बि	दे	श	य
र	म	कि	ह	म	रा	ब	ग	र	न	बिं
न	दा	र	ना	म	न्द	हा	सिं	ब	व	सिं
र	रा	व	दा	म	स	दु	र	दा	दे	न्द
य	म	स	अं	स	रा	र	स	स	ग	ह

यह भी कीजिए

(१) श्री गुरुग्रंथ साहिब के संपादक कौन थे?

(२) खालसा पंथ की स्थापना क्यों की गई?

(३) खालसा के संस्थापक कौन थे?

(४) सबसे छोटी अवस्था में गुरुगद्दी पर कौन बैठे थे?

देवपुत्र प्रश्नमंच

◀◀ (१) सुप्रसिद्ध भारतीय संगीतज्ञ बैजू बावरा के गुरु कौन थे?
(अ) तानसेन
(आ) बाबा हरिदास
(इ) विष्णु दिगम्बर पलुस्कर

◀◀ (२) महारथी कर्ण को धनुर्विद्या किसने सिखाई थी?
(अ) परशुराम
(आ) द्रोणाचार्य
(इ) भीष्म पितामह

◀◀ (३) महर्षि दयानन्द के गुरु का नाम क्या था?
(अ) स्वामी विवेकानंद
(आ) स्वामी ब्रह्मानंद
(इ) स्वामी बिरजानंद

◀◀ (४) भक्तिमती मीराबाई ने अपना गुरु किसे बनाया था?
(अ) संत रविदास
(आ) संत सूरदास
(इ) संत तुलसीदास

◀◀ (५) संत कवि तुलसीदास के गुरु कौन थे?
(अ) महात्मा नरहरिदास
(आ) महात्मा दीनबंधुदास
(इ) महात्मा रामचंद्र दास

◀◀ (६) भगवान श्रीकृष्ण के विद्यागुरु का नाम क्या था?
(अ) महर्षि वेदव्यास
(आ) महर्षि वाल्मीकि
(इ) महर्षि सान्दीपनि

◀◀ (७) श्रीराम के पुत्र लव-कुश की शिक्षा-दीक्षा किस ऋषि ने की?
(अ) वाल्मीकि
(आ) वसिष्ठ
(इ) विश्वामित्र

◀◀ (८) श्रीराम के विद्या गुरु कौन थे?
(अ) वाल्मीकि
(आ) वसिष्ठ
(इ) अगस्त्य

◀◀ (९) महादानी बलि के गुरु कौन से आचार्य थे?
(अ) शुक्राचार्य
(आ) द्रोणाचार्य
(इ) कृपाचार्य

◀◀ (१०) सम्राट चन्द्रगुप्त के गुरु का नाम क्या था?
(अ) चाणक्य
(आ) जमदग्नि
(इ) पौरस

(उत्तर इसी अंक में।)

बोझ उतर गया

चेतन नीतू से दो वर्ष छोटा था। वह चौथी कक्षा में पढ़ता था और नीतू छठी कक्षा में। दोनों ने अब नई कक्षाओं में प्रवेश करना था। इसलिए उन्होंने अगली कक्षाओं की पुस्तकें अभी से ही खरीदनी शुरु कर दी थीं। चेतन को तो सभी पुस्तकें मिल गई थीं। मगर नीतू को विज्ञान और गणित की पुस्तकें न मिलीं। अगर एक दो विद्यार्थियों से मिलीं भी तो उन पुस्तकों के बहुत से पृष्ठ फटे हुए थे। चेतन के पिता जी एक कारखाने में मजदूर थे। उनका वेतन भी बहुत कम था और वेतन भी अभी आठ–दस दिनों तक मिलता था जो पुस्तकें उन्होंने ली भी थीं, उनके पैसे भी वेतन मिलने पर देने की बात हुई थी।

एक दो दिनों से चेतन गुमसुम दिखाई दे रहा था। उसके मन में क्या था, नीतू को कुछ पता न था। रवि के पिताजी की पुस्तकों की दुकान थी। विद्यालय के बहुत से विद्यार्थी वहीं से पुस्तकें खरीदते थे। चेतन घूमता हुआ रवि के पिताजी की दुकान पर चला गया। रवि ओर उसके पिताजी दुकान पर ही थे। कुछ समय बाद रवि के पिताजी ने रवि से कहा– ''मैं शहर जा रहा हूं। लगभग एक घण्टे तक लौट आऊँगा। तुम दुकान पर ही रहना। इधर–उधर मत जाना।'' यह कहकर वह शहर जाने वाली बस से रवाना हो गए।

रवि दुकान में बिखरी हुई पुस्तकें ठीक करने लगा। चेतन भी उसकी मदद करने लगा। तभी चेतन की दृष्टि सातवीं कक्षा की गणित की पुस्तक पर पड़ी। उसने पुस्तक खोल कर देखा। उसका मूल्य पचास रुपए था। लगभग आधा घण्टा बीतने के बाद चेतन घर लौटने लगा। उसके कदमों में तेजी थी। चेहरे पर एक मुस्कान भी थी। ऐसे लगता था जैसे उसे कोई विशेष वस्तु मिल गई हो।

''नीतू!'' घर जाकर चेतन ने अपनी बहन को संकेत करके एक तरफ बुलाया। नीतू आ गई।

''आँखें बंद करो।'' चेतन बोला।

''क्यों कोई खास बात है?''

''हाँ। तुम पहले आँखें तो बंद करो।''

''लो।'' नीतू बोली।

''अब अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाओ।'' चेतन फिर बोला।

जैसे ही नीतू ने अपने हाथ आगे किए, चेतन ने आगे से अपना कुर्ता ऊपर उठाया और पैंट में छिपाकर लाई एक पुस्तक निकाल कर उसके हाथ में थमा दी। नीतू ने आँखें खोलीं और पुस्तक देखी। सातवीं कक्षा का गणित था।'' यह नई पुस्तक तुम कहां से लेकर आए हो?'' उसने हैरानी से पूछा।

''बस यह नही बताना। यह पुस्तक तुम्हारे लिए लेकर आया हूँ।''

कहानी : डॉ. दर्शनसिंह 'आशट'

''सच सच बताओ। यह पुस्तक कहां से लेकर आए हो?''

''एक बार कह दिया न यह नहीं बताऊगा।''

''तुम्हें मेरी कसम लगे।''

जैसे ही नीतू ने अपनी कसम की बात कही, चेतन अपनी बात छुपाकर न रख सका। और धीरे से बोला–''रवि की दुकान पर गया था। उसने पिताजी शहर गए हुए थे। जब रवि अपनी दुकान से किसी काम से बाहर गया तो मैंने चुपके से यह पुस्तक अपने कुर्ते के नीचे छुपा ली थी।'' यह सुनकर नीतू के चेहरे का रंग एकदम उड़ गया।

''तुम्हें यह पुस्तक चोरी करने के लिए किसने कहा था?''

''किसी ने नहीं। तुम्हें इस की आवश्यकता थी। इसलिए....।''

''तुमने आज बहुत बुरा काम किया है। ये पकड़ो अपनी पुस्तक। जहां से लेकर आए हो, वहां पर ही रख कर आओ।''

''क्या? चेतन भौचक्का सा रह गया।

''क्या क्या? अब तुमने चोरी करना भी सीख लिया है। जब तक तुम यह पुस्तक वापिस नहीं करोगे तब तक मैं तुमसे नहीं बोलूँगी।'' चेतन उदास हो गया। उसे अपनी बहन से ऐसी उम्मीद नही थी।

''अपने पास नई पुस्तकों के लिए पैसे नहीं थे। इस वजह से मैं तुम्हारे लिए चोरी करके लाया था।'' चेतन की आंखें छलक पड़ीं।

''पगले, अगर घर में पैसे न हों तो क्या फिर चोरी ही करनी चाहिए? जाओ, अभी यह पुस्तक वहां पर ही रख कर आओ।''

''रवि क्या कहेगा?'' चेतन मन ही मन शरमा रहा था।

''उसकी चिंता मत करो। मैं तुम्हारे साथ चलती हूं।'' नीतू बोली। दोनों बहन–भाई रवि की दुकान पर जा पहुंचे। रवि के पिताजी अभी तक शहर से नहीं लौटे थे। नीतू रवि से पुस्तकों के बारे में बातें करने लगीं। रवि उसको मूल्य सूची दिखाने में व्यस्त हो गया। चेतन ने मौका पाकर वह पुस्तक चुपचाप वहां जा रखीं जहां से उसने उठाई थी। कुछ देर बाद दोनों बहन–भाई तेज कदम उठाते हुए घर की ओर लोट रहे थे।

''नीतू! मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरे सर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो।'' चेतन बोला।

''चोरी की वस्तु का मन पर बोझ बढ़ता जाता है। अब कभी ऐसा बोझ मत उठाना, समझे।''

नीतू ने चेतन का प्यार से कान पकड़ा और मुस्कुरा दी।

फिर दोनों घर आकर इकट्ठा बैठकर खाना खाने लगे।

एक विचार चेतन के मन में घुमड़ने लगा जितने साहस से उसने चोरी की उस गलती को सुधारते समय वह कमजोर क्यों बना और फिर उसका चेहरा निश्चय की किरणों से दमक उठा। 'कल वह अवश्य बता देगा अपने दोस्त रवि को सच।'

● पटियाला (पंजाब)

(जयंतीः ३१ जुलाई)

मुंशी प्रेमचन्द

कविता : डॉ. दशरथ मसानिया

सन अट्ठारह सौ अस्सी, लमही सुंदर ग्राम।
प्रेमचंद को जनम भयो, हिन्दी साहित काम।।
परमेश्वर पंचन बसें, प्रेमचंद कहि बात।
हल्कू कम्बल बिन मरे, वही पूस की रात।।
सिलिया को भरमाय के, पंडित करता पाप।
धरम ज्ञान की आड़ में, मनमानी चुपचाप।।
बेटी बुधिया मर गई, कफन न पायो अंग।
घीसू माधू झूमते, मधुशाला के संग।।
होरी धनिया मर गए, कर न सके गोदान।
जीवन भर मेहनत करी, प्रेमचंद वरदान।।
मुन्नी तो तरसत रही, आभूषण नहि पाई।
झुनिया गोबर घूमते, बिन शिक्षा के माहि।।
बेटी निर्मला कह रही, कन्या दीजे मेल।
जीवन भर को मरण है, ब्याह होय बेमेल।।
पंच बसे परमात्मा, खाला लिए बुलाय।
शेखाजुम्मन देखते, अलगू करते न्याय।।

● आगर मालवा (म.प्र.)

बच्चो! इस कविता में हिन्दी कथा एवं उपन्यास विधा के सम्राट कहे जाने वाले मुंशी प्रेमचंद जी की कई कृतियों एवं उनके पात्रों के नाम आए हैं। क्या आप उन्हें पहचान सकते हैं? करके देखिए।

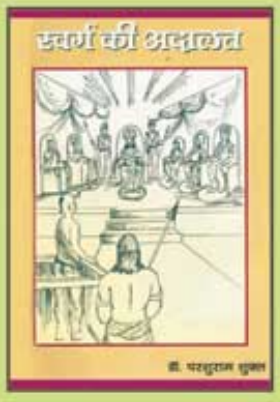

मायाश्री राष्ट्रीय साहित्य पुरस्कार घोषित

वर्ष २०१६ के लिए देवपुत्र के माध्यम से सुप्रसिद्ध स्थापित राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार वर्ष २०१६ के लिए **डॉ. परशुराम शुक्ल (भोपाल) की बाल नाट्य कृति 'स्वर्ग की अदालत'** को प्रदान किया जाएगा।

ज्ञातव्य है कि प्रतिवर्ष बाल साहित्य की किसी एक विधा के लिए डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा ५०००/- का पुरस्कार दिया जाता है।

(व्यास पूर्णिमा : १९ जुलाई)

पुराण पहेली

राजेश गुजर

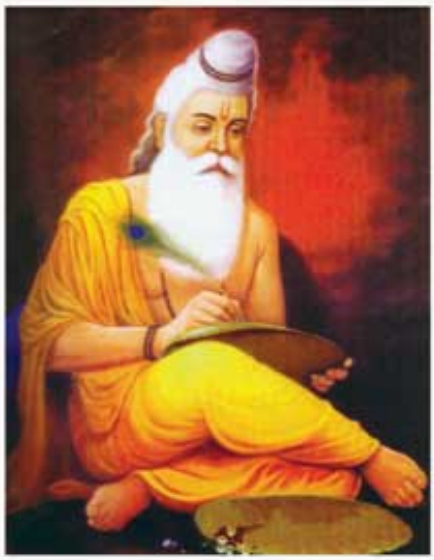

त	वि	वा	वा	ग	अ	ब्र
व	यु	ष्णु	रू	म	ग्नि	ह्म
ग	कू	ड़	य	ह	न	वै
भा	र्म	दी	रा	ड	ष्य	व
स्कं	र	व	लिं	वि	ह्मां	र्त
ना	द	ग	भ	म	त्स्य	ब्र
मा	र्कं	डे	य	प	द्म	ह्म

बच्चो, इस वर्ग पहेली में उठारह पुराणों के नाम छिपे हैं, ये नाम सीधे-उल्टे, आड़े-तिरछे, लिखे हैं, इन्हें ढूंढो और अपना ज्ञान बढ़ाओ।

(उत्तर इसी अंक में।)

कविता बनाइए १९

बच्चो ! इस चित्र को देखकर आपको अपनी कक्षा की याद अवश्य आएगी। इस बार इसी चित्र पर आधारित कविता बनाकर भेजिए। चयनित कविता सितम्बर अंक (शिक्षक दिवस) के अवसर पर प्रकाशित की जाएगी।

(जयंतीः २३ जुलाई)

बाल गंगाधर तिलक

कविता : डॉ. विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

तिलक बाल गंगाधर! तुमको,
शत-शत बार प्रणाम हमारा।

पराधीनता के बन्धन में,
बन्दी थी जब भारतमाता।
तुमने तन-मन-धन अर्पित कर,
देश-प्रेम से जोड़ा नाता।।

स्वतंत्रता अधिकार जन्म से,
दिया यही जन जन को नारा
तिलक बाल गंगाधर! तुमको,
शत-शत बार प्रणाम हमारा।।

आजादी के घोर युद्ध में,
बने एक अविचल सेनानी।
लड़े अनय अत्याचारों से,
हार नहीं जीवन में मानी।।

सुन सन्देश क्रांति का तुमसे,
जाग उठा था भारत सारा।
तिलक बाल गंगाधर! तुमको,
शत-शत बार प्रणाम हमारा।।

तुमने गीता का रहस्य भी,
बड़ी सरलता से समझाया।
मिटा अविद्या-अन्धकार को,
नवल ज्ञान का दीप जलाया।।

युग-युग तक सारी दुनिया में,
अमर रहेगा नाम तुम्हारा।
तिलक बाल गंगाधर! तुमको,
शत-शत बार प्रणाम हमारा।।

● लखनऊ (उ.प्र.)

हमारे राज्य पुष्प

मेघालय का राज्य पुष्पः

लेडी स्लिपर आर्किड

डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत के उत्तर-पूरब में,
फूल निराला खिलता।
लेड़ी चप्पल सा होने से,
नाम इसे यह मिलता।
पालनहार इसे गमलों में,
घर के पास लगाते।
बच्चे जैसा इसे पालते,
इस पर प्यार लुटाते।
बड़ी तेज गति से बढ़कर यह,
अपना रूप दिखाता।
सर्दी चाहे जितनी भी हो,
फूल सहन कर जाता।
पिचर प्लान्ट जैसी पंखुड़ियाँ,
लगती बड़ी निराली।
लाल गुलाबी हरे बसंती,
पीले रंगों वाली।
अपनी सुन्दरता के कारण,
जग में जाना जाता।
और अन्य फूलों से मिलकर,
संकर फूल बनाता।

● भोपाल (म.प्र.)

मोर के मौजे

कहानी : लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'

पक्षियों के विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर कुछ खास पक्षियों ने गणमान्य अतिथियों के सम्मान में एक सुंदर नृत्य नाटिका प्रस्तुत करने की योजना बनाई।

सभी पक्षी उस नृत्य–नाटिका में भाग लेने को उत्सुक थे, लेकिन नाटिका के निर्देशक श्री उलूक महोदय ने केवल कबूतर, मुर्गा, नन्हीं रंगीन चिड़ियों तथा मुख्य भूमिका के लिए मोर का चयन किया।

नृत्य नाटिका का अभ्यास शुरु कर दिया गया। यह नृत्य नाटिका चार अंकों में होनी चाहिए। पार्श्व गायन के लिए कोयल को चुना गया। सभी ने सुंदर नृत्य के साथ बढ़िया अभिनय करने के लिए कमर कस ली। मोर के तो क्या कहने थे, उसके इतने सुंदर फैले–फैले पंख, सिर पर उपयुक्त ताज, लंबी सुराहीदार गर्दन, रंग–बिरंगी ऊँची पूँछ, कबूतर का गर्व के साथ छाती फुलाना, छोटी रंगीन चिड़ियों का चहक–चहककर नृत्य के साथ देना, सचमुच बहुत सुंदर नृत्य नाटिका बनती जा रही थी। नाटक का सुखद अंत तो गजब का रस पैदा करता था। सभी उत्साह से भरे हुए थे।

उत्सव में दो दिन शेष थे, मोर घर आकर अपने नृत्य का अभ्यास कर रहा था, तो मोरनी ने कहा–''वाह! क्या शानदार पंख फैलाकर नृत्य कर रहे हैं आप, पर जब मेरी नजर आपके पैरों पर जाती है, तो मजा किरकिरा हो जाता है। सिर पर सुंदर ताज। ऐसी सुंदर गर्दन, ऐसे भव्य पंख। पर अजीब से छोटे–छोटे भद्दे पैर।

मोर ने अपने पैरों की तरफ देखा तो सोच में पड़ गया।–''कैसी–कैसी महान हस्तियाँ, गरुड़ महाराज, हंस महोदय, बाज बहादुर, सुर्खाब महाराज, नीलकंठ जी और भी कितने ही गणमान्य अतिथि सपरिवार नृत्य नाटिका देखने के लिए पधार रहे हैं। मुझे तो अपने रूप का, नृत्य का, सर्वोत्तम प्रदर्शन करना चाहिए।

''तो मुझे क्या करना चाहिए? उसने अपनी पत्नि से पूछा।''

''मेरे ख्याल से पाँवों में लाल या बैगनी रंग के सुंदर मौजे पहन लेने चाहिए।''

''ठीक है, देखो परसों ही तो नृत्य नाटिका का प्रदर्शन होना है, अभी मुझे और भी बहुत काम करने हैं, तुम ही जाकर मेरे पंखों तथा ताज से मिलते हुए मौजे ले आना।''

''ठीक है, पर आज तो मुझे अपनी सहेलियों के साथ

बगीचे में जाना है, कल तुम्हारे लिए मौजे ले आऊँगी।

मोर निश्चिंत होकर अभ्यास करने लगा। नृत्य नाटिका के प्रदर्शन पर जाने से पहले, उसने मौजे पहने तो वे बहुत ढीले थे, पर अब क्या हो सकता था, अब तो बदलने का समय ही नहीं था, इसलिए वह ढीले-ढीले मौजे पहनकर ही नृत्य नाटिका में शामिल हो गया।

नृत्य के पहले अंक में सभी पात्रों को मिलकर नृत्यगान के साथ अभिनय करना था। मुर्गे ने कबूतर ने, नन्हीं चिड़ियों ने कोयल के पार्श्व गायन के साथ सुंदर नृत्य और अभिनय का प्रदर्शन किया, पर मोर के ढीले मौजे होने के कारण वह सबके साथ तालमेल नहीं बैठा पा रहा था। उसका नृत्य स्वाभाविक तो बिल्कुल भी नहीं था। बार-बार उसकी नजर सामने देखने के बजाय अपने ढीले मौजों की तरफ चली जाती थी। यह देखकर निर्देशक उलूक महोदय मन ही मन कुढ़ रह थे, पर क्या करते? सभी गणमान्य अतिथि भी मोर के भव्य पंखों, उसके सुंदर ताजा या गर्दन पर अधिक ध्यान न देकर उसके ढीले-ढाले मौजों की तरफ देखकर हैरान हो रहे थे।

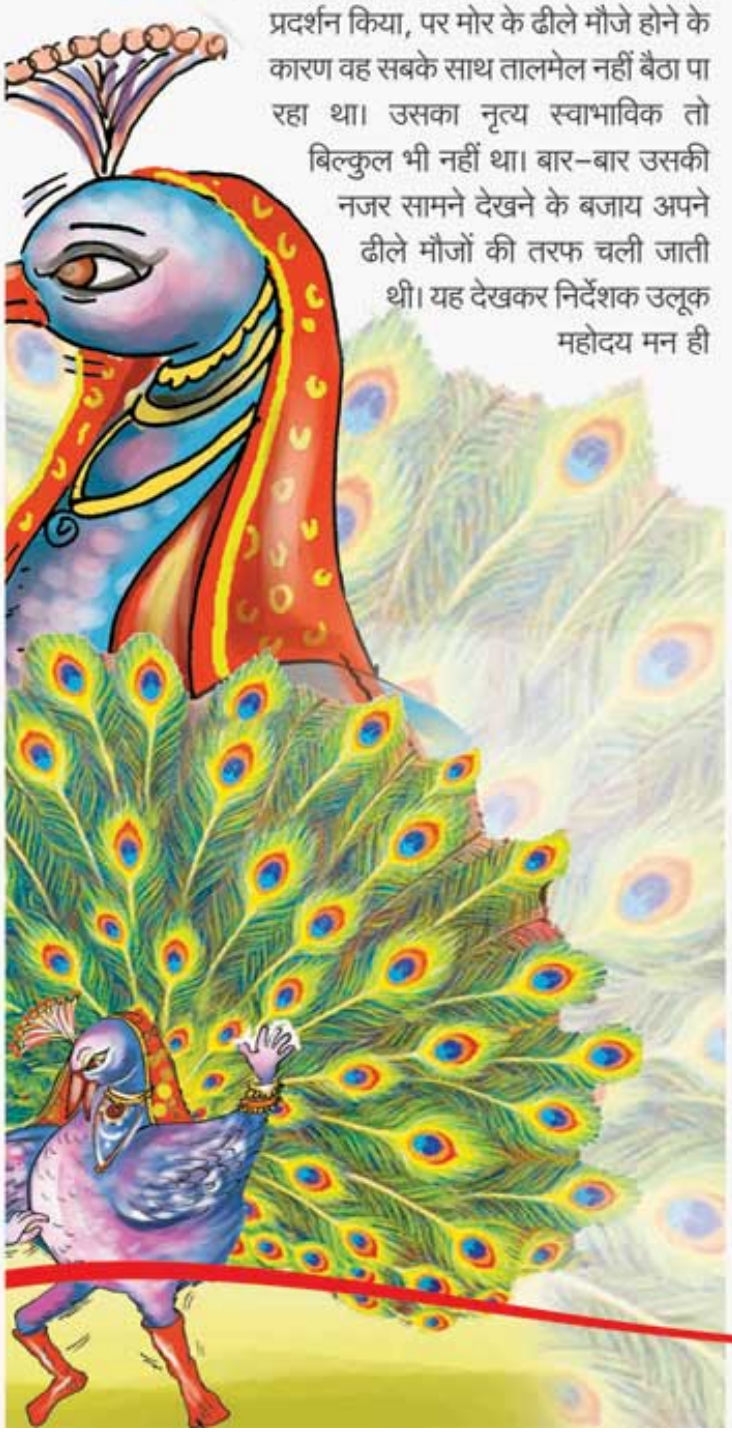

खैर, जैसे-तैसे नाटिका का पहला अंक समाप्त हुआ। परदे के पीछे जब सब आए, तो मुर्गे ने मोर की अच्छी खबर ली, ''यह मौजों की क्या हिमाकत है? तुमने तो सारी नाटिका का सत्यानाश कर दिया। यह क्या फिजूल की चीज पहनकर आ गए? कितनी मेहनत की थी हम सब ने मिलकर और अभ्यास में कितना अच्छा ताल-मेल था, पर तुमने तो सारा गुड़ गोबर कर दिया।''

तभी उलूक महोदय भी वहाँ आ गए। उन्होंने धैर्यपूर्वक मोर को समझाया-'' अरे! तुमने पैरों को छुपाने के लिए ऐसे बेहूदा मौजे पहन लिए? भाई प्रकृति ने हमें जो भी रूप दिए हैं, वही सर्वोत्तम है। अपने अंगों पर शरमाना कैसा? तुमने अपने सुंदर रूप, भव्य पंखों, सुंदर मुकुट पर ध्यान देने के बजाय, सिर्फ पैरों के बारे में ही सोचा, इसलिए सब घालमेल हो गया। ऐसा फूहड़पन किसको अच्छा लगेगा?

मोर स्वयं सकुचा रहा था। वह क्या जवाब देता?

वे फिर समझाकर बोले-''अब अगले अंकों में इन मौजों को फेंककर अपने स्वाभाविक रूप में नृत्य करो। देखो कैसी वाह-वाही मिलती है? तुम्हारे पाँवों की तरफ तो किसी का ध्यान भी नहीं जाएगा। सबकी नजर तो तुम्हारे भव्य पंखों से हटेगी ही नहीं।''

मोर को अपनी गलती का अहसास हो गया था। दूसरे तथा अगले अंकों में जब उसने सभी पक्षियों से ताल-मेल करके अपना स्वाभाविक नृत्य किया तो सभी मंत्रमुग्ध से उसे देखते रह गए। पूरे समय तालियों की गड़गड़ाहट होती रही।

इस प्रकार पहले अंक को छोड़कर पूरी नृत्य नाटिका अद्‌भुत रही सभी ने प्रशंसा के पुल बाँध दिए।

तब उलूक निर्देशक जी ने भी मोर की पीठ थपथपाई और दूसरे पक्षियों ने भी उसे ऐसे अच्छे प्रदर्शन के लिए बधाई दी।

मोर की पत्नी को भी अपनी गलत सोच का अहसास हो गया था और उसने मोर को गलत सलाह देने के लिए उससे क्षमा माँगी।

● भुवाली (उत्तराखण्ड)

सबसे अच्छा मेरा गांव

कविता : शिवप्रताप सिंह ठाकुर

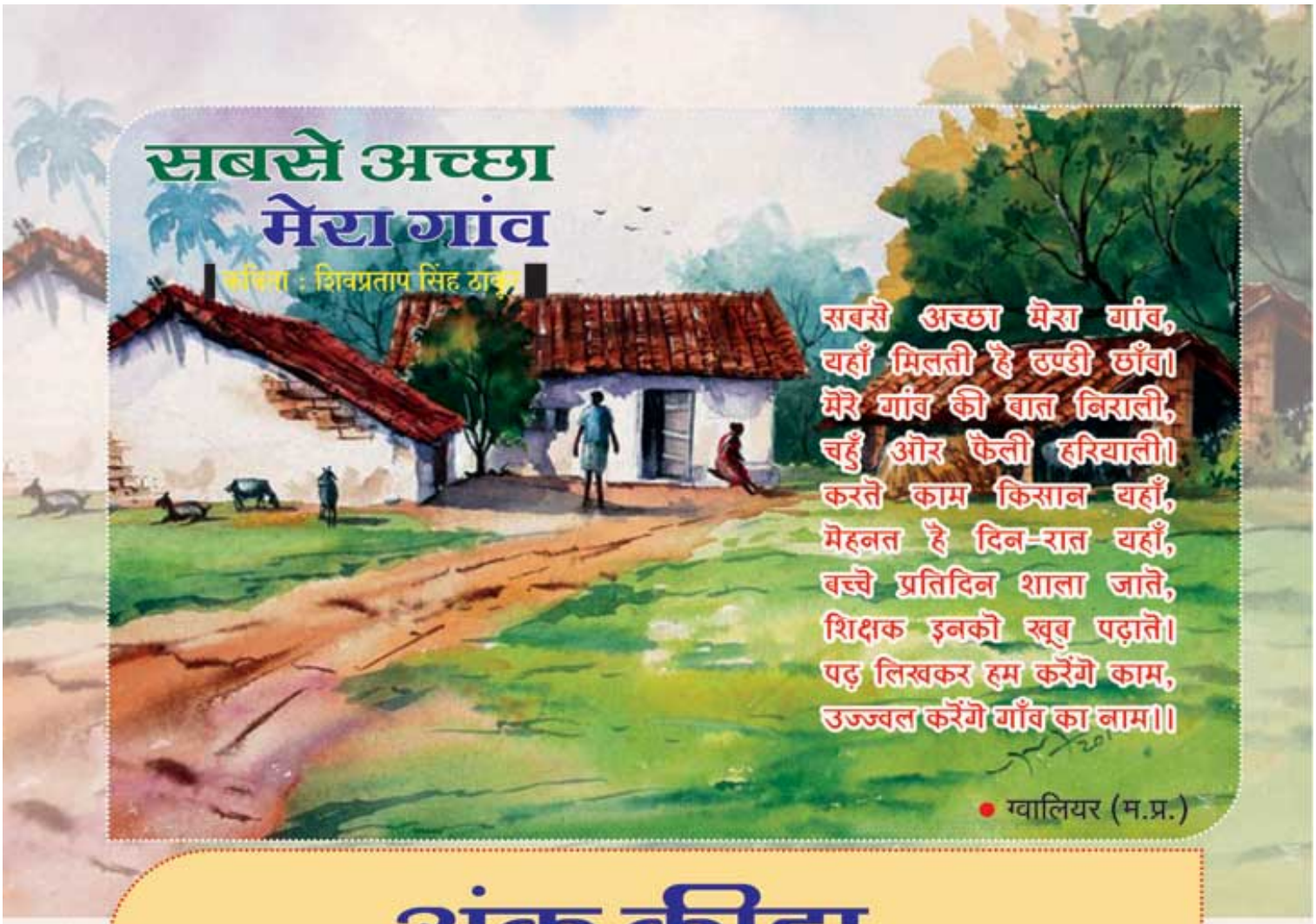

सबसे अच्छा मेरा गांव,
यहाँ मिलती है ठण्डी छाँव।
मेरे गांव की बात निराली,
चहुँ ओर फैली हरियाली।
करते काम किसान यहाँ,
मेहनत है दिन-रात यहाँ,
बच्चे प्रतिदिन शाला जाते,
शिक्षक इनको खूब पढ़ाते।
पढ़ लिखकर हम करेंगे काम,
उज्ज्वल करेंगे गाँव का नाम।।

● ग्वालियर (म.प्र.)

अंक क्रीड़ा

देवांशु वत्स

	/	५	−	८	०
×		/		×	
	×		−		७
−		−		+	
३०	×		/	५	६
५०		०		२९	

खेलने के नियम

खड़ी और आड़ी पंक्तियों के सफेद खानों में सही अंक लिखते हुए रंगीन खाने तक जाएं। रंगीन खाने में लिखे अंक सफेद खानों के अंकों के हल हैं। आप सिर्फ बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे जा सकते हैं।

(उत्तर इसी अंक में)

रोचक समाचार

सुविधाघर नहीं तो कटिंग नहीं

केरवासा (रतलाम)। स्वच्छ भारत मिशन को सफल बनाने के लिए अब लोगों ने भी सख्ती करना शुरु कर दिया है। भूतेड़ा में स्वच्छता प्रेरक व निगरानी समिति की प्रेरणा से एक हेयर सेलून संचालक ने तय किया कि जिसके घर में सुविधाघर नहीं है उस परिवार के किसी भी सदस्य की वह दाढ़ी-कटिंग नहीं बनाएगा। ठेलागाड़ी पर सब्जी बेचने वाली एक महिला ने भी ऐसा ही निर्णय लिया है। जिसके घर सुविधाघर नहीं है, वहां वह सब्जी नहीं देगी। सेलून संचालक अमरूलाल सेन ने अपनी दुकान के बाहर एक फ्लैक्स लगाया है। इसमें लिखा है 'शौचालय नहीं तो दाढ़ी कटिंग नहीं बनाई जाएगी।'

साभार: दैनिक भास्कर

परिणाम घोषित

श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१६

देवपुत्र द्वारा बाल कहानीकारों को प्रोत्साहित करने के लिए होने वाली के श्री भवालकर कहानी प्रतियोगिता २०१६ के परिणाम निम्नानुसार हैं।

• हमारी बस्ती	प्रतिष्ठा द्विवेदी, अमरपाटन	प्रथम- १५००/-
• और मम्मी लौट आई	निष्णा बनर्जी, नागपुर	द्वितीय ११००/-
• प्रेरणा वन की जादुई ताकत	विजय वैष्णव, चितौड़गढ़	तृतीय १०००/-
• नासमझ वांच्छा	छबि कानूनगो, इन्दौर	प्रोत्साहन ५००/-
• बस झूठ नहीं	समृद्धि श्रीवास्तव, ग्वालियर	प्रोत्साहन ५५०/-

विजेताओं को पुरस्कार शीघ्र ही प्रेषित किए जाएंगे।

प्रसंग

गुरु गोविन्द सिंह जी का एक शिष्य

श्री कृष्णचन्द तिवारी 'राष्ट्रबंधु'

लाहौर में एक बहुत अनुभवी चिकित्सक रहता था। वह श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के दर्शन करने आनंदपुर आया। गुरुजी ने उसे गुरुमंत्र दिया- ''जाओ दुखियों की सेवा करो, सुख पाओगे।''

वह रोपड़ जाकर चिकित्सा करने लगा। जिस समय कोई बीमार आता तभी वह सेवा समझकर बड़े प्रेम के साथ दवाई करता था।

एक दिन सवेरे बैठा हुआ वह जपु जी साहब का पाठ कर रहा था। गुरुजी आनंदपुर से चलकर उसके सामने जाकर बैठे रहे। उनका शिष्य ध्यान में इतना लीन था कि वह गुरुजी के आगमन को जान नहीं सका।

किसी ने उसी समय बाहर से आवाज दी- ''चिकित्सक जी! फलाँ आदमी बीमार है, चलो उसका इलाज करो।''

ध्यान टूटा, पाठ छूटा और सामने गुरुजी थे। दोनों में से किसको छोड़ूँ? इसका निर्णय करने में उसने गुरुजी के पूर्व कथन पर विचार किया- ''दुखियों की सेवा करना सबसे पहला काम है। इस सेवा का ही फल है कि आज गुरुजी मेरे पास आए हैं।''

उसने जाने का निश्चय और चला गया। रोगी को दवा देकर वापस आया। गुरुजी को प्रतीक्षा करनी पड़ी थी, जिसके लिए उसने चरणों में गिरकर माफी माँगी।

गुरुजी ने शिष्य को गले लगा लिया और कहा- ''बस दुखियों की सेवा ही गुरु को खुश करती है।''

शब्दक्रीड़ा : दस गुरु

(१) नानक देव (२) अंगद देव (३) अमरदास (४) रामदास (५) अर्जुन देव
(६) हरगोबिन्द (७) हर राय (८) हरकिशन (९) तेगबहादुर (१०) गोबिन्दसिंह

सही उत्तर

देवपुत्र प्रश्नमंच

(१) आ (२) अ (३) इ (४) अ (५) अ (६) इ (७) अ (८) आ (९) अ (१०) अ

तुने मुझे लात क्यों मारी

लोककथा : डॉ. गजेन्द्र आर्य

एक रात चूहा और चूही टोकरी में सोए। रात को चूहे की लात चूही को लग गई। चूही रुठ गई। सुबह चूहे ने जगाया– ''उठ जा चूही मुँह धो ले।''

चूही बोली–''ऊं हूं, तुने मुझे लात क्यों मारी?''

चूहा उठा मुँह धोया, पर चूही नहीं उठी।

चूहे ने फिर उठाया–''उठ जा चूही झाडू निकाल दे।''

चूहे ने ही झाडू निकाली। फिर उसने बर्तन साफ किए। पूरे घर का पोछा भी उसी ने लगाया। पर चूही नहीं उठी।

फिर से चूहे ने उठाया–''उठ जा चूही रोटी बना दे।''

चूही बोली – ''तूने मुझे लात क्यों मारी?''

चूहे ने ही रोटियाँ बनाई।

फिर चूही को उठाया–''उठ ओ चूही सब्जी बना दे?''

चूही ने वह राग अलापा–''ऊं हूं, तुने मुझे लात क्यों मारी?''

चूहे ने सब्जी बनाई।

उसने फिर उठाया–''उठ चूही रोटी खा ले।''

यह सुन चूही झट से उठ गई और भोजन करने लगी। वह कहने लगी कि–''पति–पत्नी की लड़ाई का बुरा नहीं मानना।

• ढापला (म.प्र.)

आ गई जुलाई

कविता : घमंडीलाल अग्रवाल

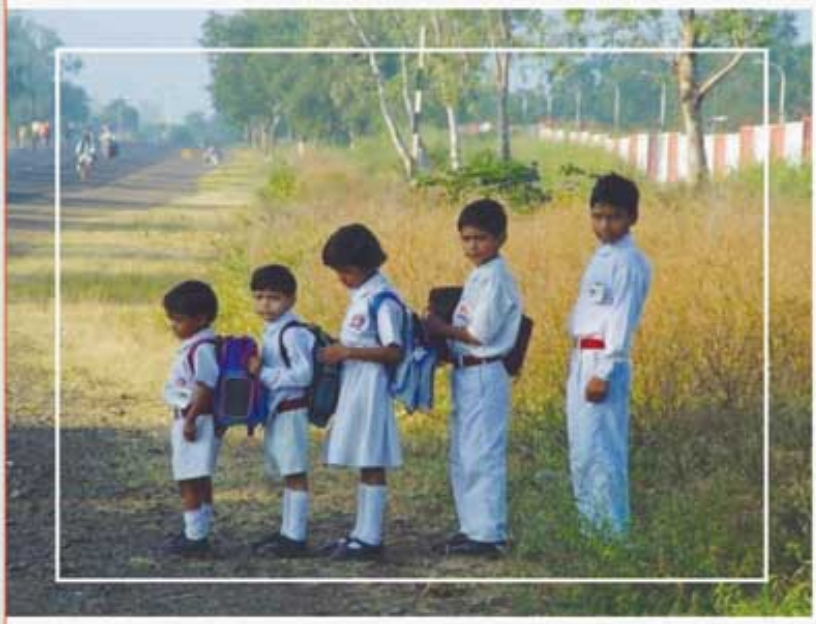

मई-जून की खूब घुमाई-
लो, फिर से आ गई जुलाई।

खुलने को है अपनी शाला,
रंग जमेगा शिक्षा वाला,
कानों में स्वर पड़े सुनाई।

नए दोस्तों से मिलना है
फूलों के जैसा खिलना है,
शिक्षक आए , राम दुहाई।

पढ़ने-लिखने से क्या डरना,
काम समय पर अपना करना,
आएगी फिर नहीं रुलाई।

डाल हाथ में हाथ बढ़ेंगे,
जीवन का वह लक्ष्य पढ़ेंगे,
छोड़ छाड़ प्रत्येक बुराई।

● गुरुग्राम (गुड़गांव) हरियाणा

प्रविष्टियां आमंत्रित

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१७

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित **मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१७** वर्ष २०१६ में प्रकाशित **बाल कहानी की पुस्तक** हेतु प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियां मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार के नाम से **४०,संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)** पर **३०, जनवरी २०१७** तक प्राप्त होना चाहिए। **पुरस्कार स्वरूप ५०००/- की राशि** प्रदान की जाती है।

बाल साहित्यकारों से प्रविष्टि स्वरूप कृतियां सादर आमंत्रित है।

– संपादक

बाल प्रस्तुति

तीन मित्र

पुलकित जैन

ज्ञान, धन और विश्वास तीनों बहुत अच्छे मित्र थे।
एक बार तीनों को बिछुडना पड़ा।
तो तीनों के मन में एक सवाल आया और पूछा कि हम अलग हो गए तो हम वापस कहाँ मिलेंगे?
ज्ञान ने कहा ''विद्यालयों, मंदिरों में मिलूंगा।''
धन ने कहा ''मैं अमीरों के पास मिलूंगा।''
और विश्वास ने रोते हुए कहा की ''मित्रों! अगर में एक बार चला गया तो कहीं नही मिलूंगा।''

● मल्हारगढ़ (म.प्र.)

समाचार

देवपुत्र के प्रसार हेतु सम्मानित

जोधपुर। विद्याभारती के जोधपुर प्रांत में देवपुत्र की सदस्यता विस्तार हेतु राजस्थान के प्रतिनिधि एवं देवपुत्र के हितचिंतक श्री मदनलाल जी राठौर सम्पूर्ण क्षेत्र में सतत प्रवास तो करते ही हैं संख्या वृद्धि हेतु अपनी ओर से प्रधानाचार्यों एवं प्राचार्यों का सम्मान भी करते हैं।

विगत १९ अप्रैल को जोधपुर प्रान्त में सम्पन्न विद्या भारती की प्रान्तीय प्रधानाचार्य, प्राचार्य बैठक में श्री अग्रवाल ने २१ विद्यालयों को देवपुत्र संख्या विस्तार हेतु आस्तरण (बेडशीट) देकर सम्मानित किया। ये विद्यालय हैं- आविम पेवेलियन के पास, आविम स्वरूपगंज, आविम मा. रेवदर, नवीन आविम पिण्डवाड़ा, श्री गोपालकृष्ण शास्त्री मा. सुजानगढ़, रामगोपाल गाड़ोदिया उ. मा. सुजानगढ़, आविम बालक शिवगंज, आविम बालिका शिवगंज, आविम मा. पोसालिया, आविम, बालिका रामझरोखा परिसर, आविम मा. बरलूट, श्री हंसनिर्वाण सरस्वती विद्यालय, एम. शांतिलाल मेहता प्रा., आविम मा. आय.ओ.सी. कॉलोनी, सरस्वती विद्या मंदिर मा. बालक सादड़ी, आविम उ. प्रा. देसूरी, आविम, बालिका मा. सुमेरपुर, आविम मा. खारारोड़ आहोर, आविम मा. रामसीन, आविम उ. मा. माजीवाला, आविम उ. प्रा. जसोल, आविम मा. फतेहगढ़, आविम मा. देवीकोट, आविम मा. गांधी कॉलोनी, आविम मा. खाजूवाला, आविम उ. मा. रायसर मार्ग नोखा, भारतीय आविम मा. रघुनाथसर कुआँ बीकानेर, सूरजकुमारी गाड़ोदिया उ. मा.बालिका, आविम मा. छापर, आविम सुशीला देवी मा., विद्यानिकेतन मा. चित्तौड़गढ़। साथ ही चूरू और सिरोही जिलों को भी सर्वाधिक संख्या वर्द्धन हेतु सम्मानित किया। जोधपुर प्रांत को भी सम्मान सहित माँ सरस्वती की प्रतिमा भेंट की।

सम्मान सत्र में जोधपुर प्रांत के मंत्री एवं सचिवद्वय सहित अनेक वरिष्ठ कार्याकर्त्ता एवं अधिकारी उपस्थित थे।

टप्पू की नादानी

कथा - चंदा सिंह

चित्रकथा - देवांशु वत्स

मुद्राओं के ढूँढो नाम

राजेश गुजर

दुनिया के विभिन्न देशों की मुद्राओं के नाम इन वाक्यों में छिपे हैं ढूढों तो जानें?

- आयुष हमेशा मेले में से नये नये खिलौने खरीदता है। (जापान)
- गीता की माँ पक्षियों के लिए छत पर दाने डाल रखती है। (अमेरिका)
- कालीराम संगीत के विख्यात गुरु हैं। (इटली)
- नारियल पानी पीना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है। (कम्बोडिया)
- हमें यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए। (बर्मा)
- अजय ने पेट दर्द होने पर पुदीना रस पीया। (अल्जीरिया)
- वीरू बलवान होने के साथ-साथ अच्छा तैराक भी है। (रूस)
- जय के पिता ने मस्ती करने पर उसे फटकार लगाई। (बांग्लादेश)
- जेलर ने कैदियों से कहा चक्की पीसो तब खाना मिलेगा। (मेक्सिको)
- रीमा दृष्टिबाधित होने से रूप या रंग नही देख सकती। (भारत)
- रामू बहुरूपिया बनकर जीवन यापन करता है। (नेपाल)

● महेश्वर (म.प्र.)

अंक क्रीड़ा

४०	/	५	−	८	०
×		/		×	
२	×	५	−	३	७
−		−		+	
३०	×	१	/	५	६
५०		०		२९	

सही उत्तर

पुराण पहेली

त	वि	वा	वा	ग	अ	ब्र
व	यु	ष्ण	रू	म	ग्नि	ह्म
ग	कू	ड़	य	ह	न	वै
भा	र्म	दी	रा	ड	ष्य	व
स्कं	र	व	लिं	वि	ह्मां	र्त
ना	द	ग	भ	म	त्स्य	ब्र
मा	कं	डे	य	प	द्म	ह्म

पुस्तक परिचय

डॉ. परशुराम शुक्ल के बाल कथा साहित्य समग्र की विवेक पब्लिशिंग हाउस धामाणी मार्केट चौड़ा रास्ता, जयपुर ०३ द्वारा प्रकाशित पांच बहुमुल्य कथा पुस्तकों की शृंखला

जंगल की बाल कहानियां

बच्चों में वन्य प्राणियों के प्रति उत्सुकता जगाती १७ बाल कहानियाँ

मूल्य २४५/-

प्राचीन ग्रंथों की बाल कहानियां

प्राचीन ग्रंथों रामायण एवं महाभारत की बालोपयोगी २८ कहानियाँ

मूल्य २००/-

शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ

शौर्य, साहस, परिश्रम, दया, भलाई, ईमानदारी आदि जीवन मूल्यों का महत्व रेखांकित करती २० कथाएं।

मूल्य २००/-

लोककथाओं पर आधारित बाल कहानियां

लोककथाओं के अपार कोश से चयनित १२ लोक कथाएं जिनमें शाश्वत जीवन मूल्य अभिव्यक्त हैं।

मूल्य १००/-

परियों की बाल कहानियाँ

बालमन को लुभाती, विचित्र किन्तु आनंदमय कल्पना लोक की सृष्टि करती १० रोचक परिकथाएं।

मूल्य २००/-

बाल साहित्य पर दो महत्वपूर्ण शोध ग्रंथ

राष्ट्रीय फलक पर स्वातंत्र्योत्तर बाल कविता का अनुशीलन

प्रकाशक – नमन प्रकाशन
४२३१/१, अंसारी रोड़, दरियांगज,
नई दिल्ली ११०००२

मूल्य ६५०/-

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' द्वारा प्रस्तुत मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सृजित बाल काव्य का प्रमाणिक शोधपरक परिचय कराती शोध प्रबंध।

हिन्दी के बाल एकांकी साहित्य की नाट्य शास्त्रीय अनुशीलन

प्रकाशक – आशीष प्रकाशन
वितरक – ज्ञानोदय प्रकाशन
सी–१७, मानसरोवर काम्पलेक्स
पी. रोड़, कानपुर २०८२१२

मूल्य ५००

डॉ. लक्ष्मीशंकर कुशवाहा द्वारा प्रस्तुत हिन्दी के बाल एकांकियों पर एक महत्वपूर्ण शोध विमर्श जिसमें नाट्य शास्त्रीय दृष्टिकोण से इन एकांकियों को परखा गया है।

गुड़िया का पेट

कविता : प्रभुदयाल श्रीवास्तव

मेरी गुड़िया का छोटा सा,
चिड़ियों जैसा पेट।

रोटी, एक कभी खाती है,
कभी कभी तो आधी।
दादी जब देती तो कहती,
ना–ना अब न दादी।
साफ मना कर देती सबको,
बिन ही लॉग लपेट।

कहती, खाने को ना जीती,
खाती हूँ जीने को।
उसकी दीदी ने बोला है,
गुस्सा, गम पीने को।
उठती सुबह पांच पर, जाती,
रात दस बजे लेट।

नहीं किसी झगड़े झंझट में,
पाठ नियम से पढ़ती।
कर्म करो तो फल मिलता है,
कहकर खूब चहकती।
कहती, चिड़ियाँ रामलला की,
रामलाल के खेत।

• छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

बाल प्रस्तुति

बताओ जरा?

शिवम् कुमार दीवान

दो हिरण खड़े चर-चर करते
अन्न खाते न पानी पीते।।
हरा कटोरा अंदर भात,
खा लो भैया दो-दो हाथ।।

• इटारसी (म.प्र.)

उत्तर : दरवाजा, सीताफल

बरसात आई

कविता : राजा चौरसिया

ये झुंड बादलों के
देने लगे दिखाई
पानी लगा बरसने
बरसात अहा आई
रिमझिम, झड़ी या टप-टप
सड़कों पे कहीं छप-छप
सोंधी महक से धरती
फूली नहीं समाई
चलती हवाएँ ठंडी
खुशियों की हरी झंडी
परदे में छिपा सूरज
गरमी की है विदाई
सब ताल, नदी, जंगल
तरु भी मनाएँ मंगल
मोरों ने नाच करके
बांकी छटा दिखाई

● उमरियापान (म.प्र.)

रोचक जानकारी

आलू आया भारत

पुष्पेन्द्र कुमार 'पुष्प'

आलू जो सभी उम्र के लिए सर्वोत्तम आहार है। जिसमें लोहा, कार्बोहाइड्रेट और विशेष रूप से विटामिन-सी विद्यमान है। उसने भारत तक आने में अपनी लंबी यात्रा कैसे तय की इसकी यात्रा काफी मनोरंजक है। सन १५३१ में स्पेन ने पेरु को जीता तो लगभग बीस वर्ष तक उन्हें आलू की जानकारी नहीं थी। पेरु में यह सब्जी दो हजार वर्ष से बोई जा रही थी। वहां के लोग इसे बताता कहते थे। १५५३ ई. में स्पेन का एक सैनिक जब पेरु से अपने देश लौटा तो उसने इस सब्जी के बारे में जानकारी दी। इस जानकारी ने लोगों में कौतूहल जगा दिया। १५७० ई. में इस सब्जी का एक पौधा स्पेन पहुंचा। लाने वाले ने इसे पताता नाम बताया।१५७८ में ड्रेक ने पेरु के समुद्री तट पर बसी हुई बस्तियों में लूटपाट की। वहां उसे आलू के पौधे भी हाथ लगे। यह पौधा ड्रेक द्वारा यूरोप लाया गया। जर्मनी के एक नगर अफानवर्ग में ड्रेक की एक मूर्ति स्थापित है जिसके एक हाथ में आलू है और मूर्ति के नीचे लिखा हुआ है- ''यूरोप में आलू लाने वाला।''

१५८० बताता (आलू) सब्जी पेरुवासियों के बीच इतनी महत्वपूर्ण थी कि यह उनके धर्म से जुड़ गई। बरकत के लिए वहां के निवासी अपने घरों की दीवारों पर बताता की तस्वीरें बनाते। यूरोप में इस पौधे को संदेह की दृष्टि से देखा जाता था। यहां के लोगों ने अफवाह उड़ा दी कि बताता खाने वाले को कोढ हो जाता है। अठारहवीं शताब्दी के अंत में फ्रांसके विद्वान पारमेते ने बताता के पक्ष में अभियान चलाया और पुस्तकों का प्रकाशन कर उसकी विशेषताएं बताई गई। फ्रांस के सम्राट लुई ने आलू के फूल को अपने कोट में लगाया। इससे लोगों में इसके प्रति घृणा दूर हुई और धीरे-धीरे लोग इसे पकाकर खाने लगे। यूरोप से यह एशिया और अफ्रीका में आया। भारत में इसे अंग्रेज लेकर आए और इसे पोटाटो कहा। भारतवासियों ने आलूचे और आलू बुखारे के आकार के जैसा होने के कारण इसका नाम आलू रखा।

● बाढ़ (बिहार)

बाल प्रस्तुति

सोच कर बताओ

शैलेष नागदवने

हम दोनों हैं पक्के मित्र,
मिलकर करते काम विचित्र
पांच-पांच सेवक हैं साथ,
करते हम कभी न बात।।
दिन को सोए, रात को रोए,
जितना रोए, उतना खोए।।

उत्तर : हाथ, मोमबत्ती

● बैतूल (म.प्र.)

प्रधान गुरूजी हाथीराम

हरित वन में कई प्रकार के जीव एक साथ रहते थे। हरित वन के पूर्वी किनारे पर बच्चों का एक विद्यालय था। सभी जीवों के बच्चे उसी विद्यालय में एक साथ पढ़ते थे। नटकू बंदर भी उसी विद्यालय में पढ़ता था।

नटकू कुछ शरारती स्वभाव का था। बच्चों को तंग करने में नटकू को मजा आता था। नटकू किसी बच्चे की किताब फाड़ देता तो किसी बच्चे के कपड़ों पर स्याही लगा देता। कभी किसी को नोंच लेता तो किसी को काट लेता। कक्षा के सभी बच्चे नटकू से दूर रहने का प्रयास करते थे। विद्यालय के प्रधान गुरुजी के पास नटकू की कोई न कोई शिकायत पहुँचती ही रहती थी। नटकू को प्रतिदिन कुछ न कुछ सजा मिलती रहती थी। सजा से भी नटकू में कोई सुधार नहीं हो रहा था।

कुछ दिन बाद विद्यालय के प्रधान गुरुजी का स्थानान्तरण दूसरे विद्यालय में हो गया। हाथीराम जी हाथी हरित वन के उस विद्यालय ने नए हेडमास्टर बन कर आए।

एक दिन हाथीराम जी नटकू के कक्षा में गए। वहाँ देखा कि नटकू रोमी गिलहरी की पूंछ पकड़ कर झूला रहा था। रोमी भय से चिल्ला रही थी। हाथीराम जी को देखते ही नटकू ने रोमी की पूंछ छोड़ दी। रोमी गिर पड़ी। रोमी जोर जोर से रोने लगी। नटकू जल्दी से अपनी जगह पर जा बैठा। हाथीराम जी ने रोमी को उठाया। समझा कर रोमी को चुप कराया। सभी बच्चे नटकू की पिटाई का इंतजार करने लगे। हाथीराम जी ने कक्षा में नटकू को नहीं पीटा।

''नटकू कार्यालय में आओ'' कह कर हाथीराम जी अपने कार्यालय में चले गए।

कहानी : विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

नटकू हाथीराम जी के कार्यालय पहुँचा तो अपना हाथ आगे करके खड़ा हो गया। पहले वाले गुरुजी नटकू को दो चार बेत लगा देते थे। हाथीराम जी की टेबल पर बेत नहीं थी। हाथीराम जी ने नटकू को स्टूल पर बैठने को कहा।

''नटकू में तुम्हें सजा जरूर दूंगा, मगर आज नहीं। मुझे यह बताओ कि तुम बच्चों को तंग क्यों करते हो? हाथीराम जी ने अपनी वाणी में कुछ मिठास घोलते हुए कहा।

''कक्षा वाले मुझसे जलते हैं। मेरी झूठी शिकायतें करते हैं।'' सहानुभूति पाकर नटकू बोला।

''आज तो किसी ने तुम्हारी शिकायत नहीं की थी। मैंने ही तुम्हें रोमी को तंग करते देखा था।'' हाथीराम जी ने प्रश्न किया। नटकू कुछ नहीं बोला। गर्दन झुकाए चुपचाप खड़ा रहा।

''नटकू! अब झूठ बोलना छोड़ दो। मुझे धोखा नहीं दे पाओगे। तुम्हें किसी से कोई शिकायत है तो मुझसे कहो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा। अब शिकायत नहीं आनी चाहिए। जाओ कक्षा में बैठो।'' हाथीराम जी ने नटकू को क्षमा करते हुए कहा।

नटकू के लिए वह नया अनुभव था। पहले तो जब भी गुरूजी के कमरे से निकलता तो हाथों सहलाता रहता था। कक्षा में जाते ही शिकायत करने वाले बच्चे को धमकी देता था। उस दिन नटकू ने किसी बच्चे से कुछ नहीं कहा। वह कक्षा में जाकर चुपचाप बैठ गया।

नटकू को चुपचाप देख बबलू बोला–''लगता है आज बेतें कुछ अधिक पड़ी है। बेचारे नटकू की बोलती बंद है।''

बबलू की बात सुनकर नटकू को गुस्सा आया था। नटकू बबलू को पीटने के लिए उठा। तभी विज्ञान के शिक्षक कक्षा में आ गए। नटकू वापस जगह पर बैठ गया।

हाथीराम ने शिक्षकों की बैठक में अपने साथियों से नटकू के व्यवहार की चर्चा की। उन्हें पता चला कि नटकू का परिवारिक जीवन सही नहीं है। घर में नटकू की जरूरतों पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता। बात बात पर पिटाई भी होती रहती है।

हाथीराम जी ने साथी आध्यापकों से नटकू से सहानुभूति रखने को कहा। नटकू के पिता झटकू बंदर को विद्यालय बुलाया गया। हाथीराम जी ने झटकू को समझाया कि नटकू के साथ मारपीट करना अच्छी बात नहीं है। नटकू अच्छा बच्चा है । उस पर ध्यान दोगे अच्छे परिणाम मिल सकतें हैं।''

हाथीराम जी ने विद्यालय की गतिविधियों में भी बदलाव किया। बच्चों के लिए कक्षा में बैठकर खेलने वाले शतरंज, कैरम जैसे खेलों की व्यवस्था कर दी। बच्चों की अतिरिक्त ऊर्जा शरारतों की बजाय खेलों में लगने लगी थी। विद्यालय समय के बाद मैदानी खेलों की व्यवस्था भी की गई। बच्चे व शिक्षक मिलकर खेला करते थे। सप्ताह के अंत में बाल सभा होने लगी थी।

नटकू पढ़ाई में तो ठीकठाक था मगर उसकी नेतृत्व क्षमता अच्छी थी। हाथीराम जी के सुझाव पर कक्षाध्यापक ने नटकू को कक्षानायक नियुक्त कर दिया था। कक्षानायक बनने के दिन से नटकू का तो कायापलट ही हो गया। नटकू की कक्षा हर गतिविधि में अच्छा प्रदर्शन करने लगी थी। नटकू विद्यालय की फुटबाल दल का सदस्य चुन लिया गया था।

कुछ दिन बाद जिला फुटबॉल चैम्पीयनशिप आयोजित हुई। सर्वाधिक गोल कर नटकू ने विद्यालय को चैम्पीयन बनवाया था। विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर नटकू के लिए विशिष्ट पदक घोषित किया गया। नटकू के साथ उसके पिता झटकू को भी मंच पर बुलाया गया। नटकू और उसके पिता के लिए उस दिन जितनी तालियां बजी उतनी उस विद्यालय में पहले कभी नहीं बजी थी।

● पाली (राज.)

जीवन सुलेख

लक्ष्मीनारायण भाला 'लच्छू भैया'

क ख ग घ ञ च छ ज
झ ङ ट ठ ड ढ ण त
थ द ध न प फ ब भ
म य र ल व श ष स
ह क्ष त्र ज्ञ

समतल से समकोण बनाती
रेखा हो सीधी खड़ी।
मात्राएँ उससे आधी हो
ऊपर-नीचे, गोल-झुकी ।।१।।
मध्य भाग से अंग जुड़े हो
सदा-सर्वदा ही छोटे।
सुगठित हो आकार सभी के
पर नहीं रेखा से मोटे।।२।।
शीर्ष भाग पर स्नेह सूत्र से
अक्षर जोड़े, शब्द रचे।
दो शब्दों की दूरी नापे
रेखा की ऊँचाई से।।३।।
सीधी रेखा के समान जो
स्वाभिमान से हुए खड़े
स्नेह-सूत्र से बंधते जाते
सार्थक जीवन वे जीते।।४।।

● भोपाल (म.प्र.)

स्वच्छता

कविता : राम पाठक

बनो सपूत देश के, स्वच्छता करो।।
जहाँ कहीं को गंदगी
देख लो संभालकर
स्वच्छता सभी करें
मान मन से त्यागकर
खुद जगो सभी का नव जागरण करो।।
स्वच्छ होगा देश जब
स्वस्थ होंगे जीव सब
झूमने लगेंगे मन
चमकने लगेगा तन
अब उठो संभालकर इंतजार मत करो।।
आओ मिलके गंदगी
देश से हटा दें हम
हर गली हो स्वच्छ
ऐसा पाठ तो पढ़ा दें हम
पूज्य भावना से कर्म साधना करो।।

दिमागी कसरत

चांद मो. घोसी

नन्हे मित्रो, हमारे चित्रकार ने इस चित्र में बहुत सी सब्जियों को मिश्रित कर दिया है, क्या आप बता सकते हैं कि चित्र में कौन-कौन सी सब्जियां हैं?

(उत्तर इसी अंक में)

कविता बनाइए (१७) की चयनित रचनाएं

मई २०१६

लटक रहे रस के गुब्बारे
मीठे-मीठे आम।
इन्हें तोड़ रस पी लूँ पहले
करूँ बाद में काम।।

कृतिका कोमल, लहार,
जिला भिण्ड (म.प्र.)

बताओ कौन हैं छोटे से बड़ा

आया है मौसम बरसाती, रिमझिम चारों ओर
उपवन उपवन थिरक उठे है, छोटे-मोटे मोर

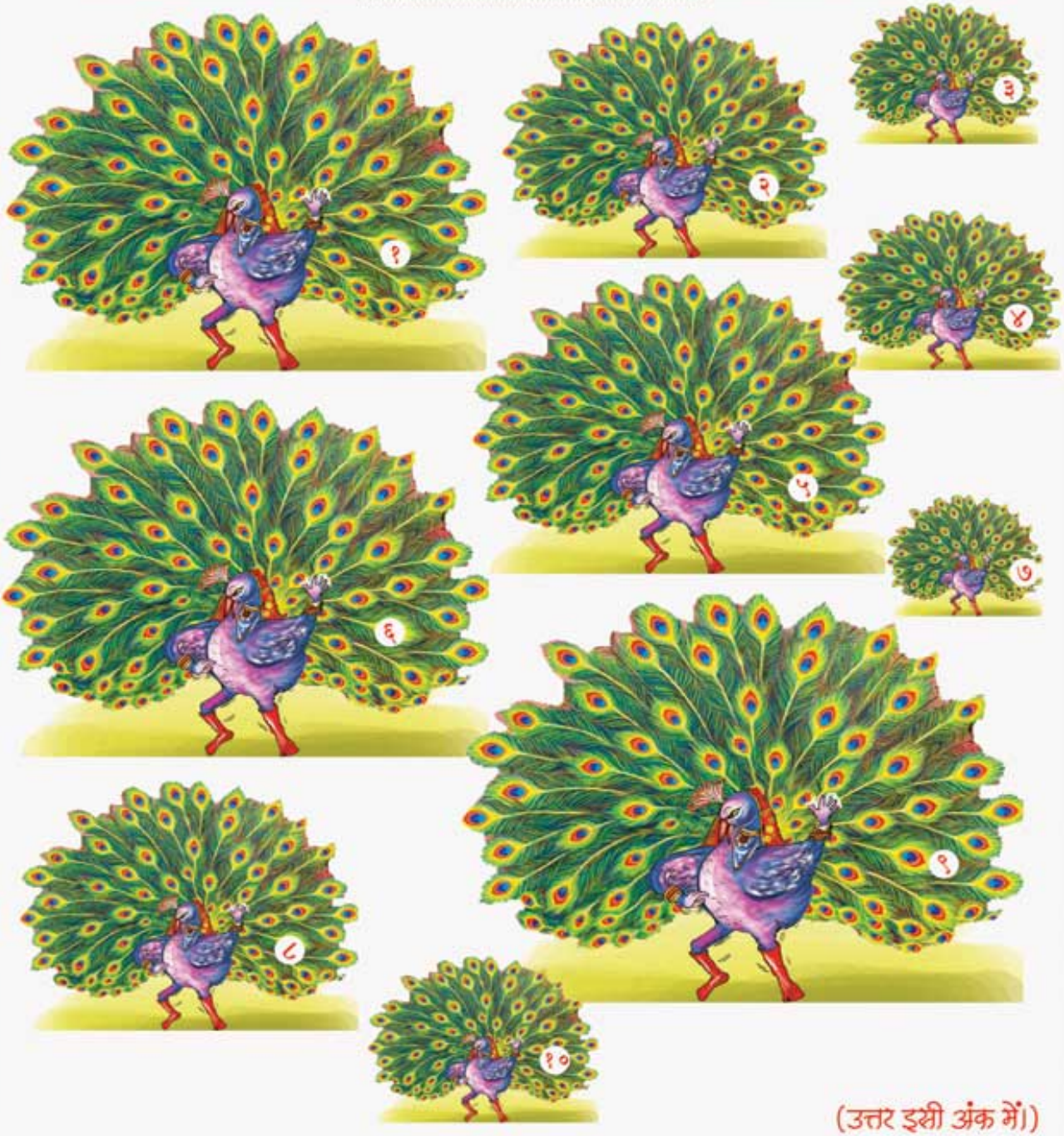

(उत्तर इसी अंक में।)

नोट्स का कमाल

कथा - चंदा सिंह

चित्रकथा - देवांशु वत्स

आपके नेतृत्व ने देवपुत्र को ऐतिहासिक ऊंचाई प्रदान की है। प्रसार संख्या के लिहाज से देवपुत्र ने एक अभिनव इतिहास रचा है। बच्चों को सकारात्मक मानवीय मूल्यों से जोड़ने और भारतीय संस्कृति से आनंददायक तौर–तरीकों से अवगत कराने में इसकी रचनाओं की अहम भूमिका रही है। यह आपकी दृष्टि सम्पन्नता और संपादन कौशल का कमाल है। विश्वास है, आपके मार्गदर्शन में पत्रिका और भी कई कीर्तिमान स्थापित करेगी।

भगवती प्रसाद द्विवेदी, पटना (बिहार)

अंक प्राप्त हुआ। मैं देवपुत्र का नया नया पाठक बना हूं। सचमुच पत्रिका के बारे में जैसा सुना था, उससे भी बढ़कर पाया। बच्चों को होली पर्व के बारे में विस्तृत जानकारी तथा विभिन्न विधाओं की अन्य रचनाओं के द्वारा मनोरंजन के साथ–साथ जो अन्य अच्छी बातें प्रस्तुत की गई हैं वह प्रशंसनीय हैं। बच्चों को उच्चस्तर की जीवन शैली की बातें उदारता, संस्कार, देशभक्ति, मानवता तथा भारतीय संस्कृति, महापुरुषों की बातें इत्यादि आप की पत्रिका पिछले ३६ वर्षों से प्रस्तुत करते आ रहे हैं। अन्य शब्दों में देश के भविष्य बच्चों का आप चरित्र निर्माण कर रहे हैं।

कुलभूषण कालड़ा, पटियाला (पंजाब)

मार्च २०१६ का देवपुत्र अंक मिला। आंगन में आम के बौर की सुगंध के साथ देवपुत्र के इस अंक की रचना सामग्री ने मीठी सुगंध का मोहक वातावरण पैदा कर दिया। सर्वप्रथम में डॉ. विकास दवे को स्वच्छ भारत अभियान का ब्राण्ड एम्बेसेडर नियुक्त किया इसके लिए बधाई। इस प्रसन्नता के साथ रचना सामग्रियों के संबंध में कुछ कहना मुझ जैसे अल्पज्ञ के लिए गूंगे का गुड़ ही होगा। क्या संपादकीय, क्या कथा कहानी एवं कविताएं सब अपने आप में बेमिसाल हैं।

हम जब अपने समय में बीसवीं शताब्दी के अन्तर्गत रचना करते थे तब की रचनाधर्मिता व अब बहुत अंतर आया है। अब रचना सामग्री लघु, शब्द मितव्यता व प्रभाव छोड़ने में अधिक सक्षम हैं। यूं कहिए गागर में सागर भरा जा रहा है। आपक संपादकीय हमेशा की तरह लाजवाब है।

बादल कुमार बनर्जी, नागदा (म.प्र.)

अप्रैल २०१६ का अंक धरोहर विशेषांक के रूप में प्रकाशित कर के हमारा तो दिल ही जीत लिया है। यह एक इतिहास है कि बड़े बाल साहित्यकारों की रचनाओं को हम तक पहुंचाया जो आज हमारे बीच नहीं है। देवपुत्र का यह अंक ऐतिहासिक लगा। जो धरोहर से कम नहीं है। भवानी प्रसाद, हरिऔध, महादेवी वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथलीशरण गुप्त, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, हरिवंश राय बच्चन, गोपाल सिंह नेपाली की कविताएँ हम पर अमिट छाप छोड़ गई।

मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, अमृतलाल नागर, सूर्यकांत त्रिपाठी, निराला, की कहानियाँ भी बीते दिनों की याद दिला गई।

देवपुत्र परिवार बधाई का पात्र है कि ऐसा अंक हमारे लिए तैयार किया।

बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान', गोरखपुर (उ.प्र.)

फतह

कविता : भगवती प्रसाद द्विवेदी

चीनी के गोदाम से
लेकर चीनी शान से
चली चींटियों की पलटन
मेहनत में जो नंबर वन।

पहले चुग दाने-दुनके
जोड़-जोड़ तिनके-तिनके
चिड़िया, नीड़ बनाती रह
जहाँ हौसला, वहीं फतह।

तितली सी उड़ान भरकर
फूलों का रस पी-पीकर
शहद सिरजती अमृत-सा
मधुमकखी मानक श्रम का।

चींटी, चिड़िया, मधुमकखी
करें परिश्रम, रहें सुखी
जो हिल-मिल मेहनत करते
अपनी किस्मत खुद गढ़ते।।

● मीठापुर (बिहार)

मुझे भी गुरु बनना है

प्रसंग : सुभाष बुड़ावनवाला

एक नवदीक्षित शिष्य ने अपने गुरु के साथ कुछ दिन व्यतीत करने के बाद एक दिन पूछा–''गुरुदेव, मेरा भी मन करता है कि आपकी ही तरह मेरे भी कई शिष्य हो और सभी मुझे भी आप जैसा ही मान सम्मान दे।''

गुरु ने मंद–मंद मुस्कुराते हुए कहा–''कई वर्षों की लंबी साधना के पश्चात अपनी योग्यता और विद्वता के बलबूते पर तुम्हें भी एक दिन यह सब प्राप्त हो सकता है।''

शिष्य ने कहा–''इतने वर्षों बाद क्यों मैं अभी ही अपने शिष्यों को दीक्षा क्यों नहीं दे सकता?''

गुरु ने अपने शिष्य को तख्त से उतरकर नीचे खड़ा होने को कहा। फिर स्वयं तख्त पर खड़े होकर कहा–''जरा मुझे उठाकर ऊपर वाले तख्त पर पहुंचा दो।''

शिष्य विचार में पड़ गया। फिर बोला–'' गुरुदेव! भला मैं खुद नीचे खड़ा हूं फिर आपको ऊपर कैसे पहुंचा सकता हूँ? इसके लिए तो पहले खुद मुझे ही ऊपर आना होगा।''

गुरु ने मुस्कुराकर कहा–''ठीक इसी प्रकार यदि तुम किसी को अपना शिष्य बनाकर ऊपर उठाना चाहते हो, तो पहले तुम्हारा उच्चस्तर पर होना भी आवश्यक है।''

शिष्य गुरु का आशय समझ गया। वह उनके चरणों में गिर गया।

● खाचरौद (म.प्र.)

पहेलियाँ

कविता : देवेन्द्र सुथार

वह गंगा के तट पर स्थित है,
विश्वनाथ का पावन घर।
धर्म, ज्ञान, संस्कृत का मंदिर
बताओ ऐसा कौन नगर।।

बसा हुआ जो क्षिप्रा तट पर,
जो महाकालेश्वर का घर।
कहो कौन सा तीर्थ सुहाना।
लगता है सिंहस्थ जहाँ पर।।

सरल, शांत, शुचिता की खान,
तीर्थों में उनका सम्मान।
राम–मिलन हित भरत पधारे,
कहो कौन सा वह स्थान।।

उत्तर : काशी, उज्जैन, चित्रकूट

● बागरा (राज.)

भालू राम बने हज्जाम

कविता : ओम उपाध्याय

भारी भरकम भालू राम,
बने शेर सिंह के हज्जाम।
भालू राम के लिए रोज
महल से आती गाड़ी।
जिस पर बैठ महल पहुँच
बनाते शेर सिंह की दाढ़ी।
मेहनताने के रूप में
भालू राम नहीं लेते रसद।
इसलिए उनको मिलता
ढेर सारा मीठा शहद।

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

● इन्दौर (म.प्र.)

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल (भोपाल) द्वारा देवपुत्र के माध्यम से विषय केन्द्रित बाल साहित्य लेखन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार की स्थापना की गई है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष देवपुत्र द्वारा निर्धारित विषय पर, निर्धारित विधा में रचित सर्वश्रेष्ठ, मौलिक, अप्रकाशित स्वरचित रचनाओं पर प्रदान किए जाएंगे। वर्ष २०१६ के लिए यह पुरस्कार ऋतुवर्णन विषय पर रचित श्रेष्ठ काव्य रचनाओं पर प्रदान किए जाएंगे।

अपना देश छः ऋतुओं वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर, बसन्त और ग्रीष्म से सम्पन्न देश है बाल साहित्य में प्रायः वर्षा, ग्रीष्म, बसन्त पर रचनाएं मिलती हैं शरद, शिशिर, हेमन्त को शीत वर्णन में ही समाहित माना जाता है। इन छहों ऋतुओं पर भी पृथक-पृथक रचनाएं हो सकती हैं। प्रविष्टियां सादर आमंत्रित हैं। इच्छुक रचनाकार अपनी प्रविष्टि ३० जनवरी २०१७ तक अवश्य भेज दें। प्रत्येक प्रविष्टि के साथ रचना के मौलिक अप्रकाशित एवं स्वरचित होने का पत्र स्वयं सत्यापित प्रमाण पत्र के रूप में साथ भेजना अनिवार्य है-इस प्रमाण पत्र की सत्यता का पूरा उत्तरदायित्व रचनाकार का रहेगा। रचनाएं हिन्दी भाषा में रचित हो। अनूदित रचनाएं स्वीकार्य नहीं है।

रचनाकार के लिए कोई आयु बंधन नहीं है। श्रेष्ठतम पांच रचनाओं का चयन देवपुत्र द्वारा मनोनीत विधा एवं विषय के मर्मज्ञ निर्णायकों द्वारा किया जाएगा। जिनका निर्णय सर्वमान्य होगा।

पुरस्कृत रचनाओं को क्रमशः १५००/- १२००/- ११००/- एवं ५००-५०० रु. के दो प्रोत्साहन पुरस्कारों से सम्मानित किया जाएगा।

विशेष - पुरस्कृत एवं अन्य प्रविष्टियाँ में से चयनित रचनाओं का संपादित स्वतंत्र संकलन या देवपुत्र में प्रकाशन की भी योजना है। अतः प्राप्त रचनाओं के प्रकाशनार्थ उपयोग का अधिकार देवपुत्र के पास सुरक्षित रहेगा। प्रकाशित संकलन/अंक की एक प्रति सम्मिलित रचनाकारों को सादर प्रेषित की जाएगी।

बाल प्रस्तुति

चुटकुले

विष्णु प्रसाद चौहान

दो मच्छर बातें कर रहे थे।
पहला - मैं डॉक्टर बनूंगा।
दूसरा - मैं इंजीनियर बनूंगा।
इतमें में अम्मा ने मच्छर अगरबत्ती जला दी।
मच्छर बोले- अम्मा ने हमारा पूरा कॅरियर खराब कर दिया।

***

शिक्षक (छात्र से) - तुम मेरी कक्षा में नहीं सो सकते।
छात्र - सो तो सकता हूं यदि आप धीरे बोलें।

***

मोनू (दुकानदार से) कोई अच्छा सा कपड़ा दिखाइए।
दुकानदार - प्लेन में दिखाऊं?
मोनू - प्लेन में नहीं, मुझे दुकान पर ही दिखा दीजिए।

***

मालकिन - क्या तुमने फ्रीज साफ कर दिया?
नौकरानी - हाँ मालकिन, फ्रीज में पड़ी आइसक्रीम तो सबसे स्वादिष्ट थी।

***

एक चिड़िया और एक चिड़े की शादी हो गई....
होना क्या था? फिर दोनों चिड़चिड़े हो गए।

***

खेल शिक्षक (छात्र से)- मुझे टेनिस के बारे में सब कुछ पता है। कुछ भी पूछो।
छात्र - अच्छा तो यह बताइए कि नेट में कितने छेद होते हैं।

***

शिक्षक (छात्र से) - कक्षा में लड़ाई क्यों नही करनी चाहिए।
छात्र - क्योंकि पता नहीं परीक्षा में किसके पीछे बैठना पड़ जाए।

***

चाहे कितनी भी अंग्रेजी हम सीख लें, परन्तु कुत्ता पीछे पड़ जाए, तो हट्ट-हट्ट ही कहना पड़ता है।

***

भारत में एक गाइड किसी विदेशी पर्यटक को दिल्ली घुमा रहा था। गाइड ने कहा- यह हमारा संसद भवन है।
विदेशी पर्यटक ने कहा- बस ...? इतना बड़ा तो हमारे यहा पिज्जा होता है।
गाइड चुप रहा और उसे आगे ले गया और फिर बोला- यह हमारा लाल किला है।
विदेशी पर्यटक बोला- बस...? इतना तो हमारे यहां बर्गर होता है।
गाइड को गुस्सा तो बहुत आ रहा था, मगर वह चुप रहा। फिर गाइड उसे कुतुब मीनार दिखाने पहुंचा। विदेशी पर्यटक ने पूछा- ये क्या है? गाइड बोला - ये तुम्हारे पिज्जा और बर्गर पर टोमेटो सॉस डालने की बोतल है।

***

शिक्षक (छात्र से)- सीनियर और जूनियर में क्या अंतर है?
छात्र - जो समुद्र के पास रहता है, वो सी-नियर और जो चिड़ियाघर के पास रहता है, वो जू-नियर।

***

पुलिस (चोर से)- तुमने इतनी चोरियां की, लेकिन सब अकेले ही।
चोर - आप तो जानते ही है, आजकल ईमानदार साथी मिलते ही कहां हैं?

***

बैंक मैनेजर - यह क्या अजीब हस्ताक्षर हैं?
मोनू - ये हस्ताक्षर मेरी दादी के हैं सर।
बैंक मैनेजर -ऐसा क्या अजीब नाम है उनका?
मोनू -जलेबी बाई।

● ढाबला हरदू (म.प्र.)

भूल-भुलैया

चांद मो. घोसी

बेचार टिंकू कार सवार अपने साथियों तक पहुंचना चाहता है परंतु भूल-भुलैया के कारण ऐसा करने में असमर्थ है, क्या आप वहां तक पहुंचनें में उसकी सहायता कर सकते हैं?

● मेड़तासिटी (राज.)

सही उत्तर

मुद्राओं के नाम ढूँढो –

(१) येन (२) डालर (३) लीरा (४) रियल (५) यात
(६) दीनार (७)रूबल (८) टका (९) पीसो (१०) रूपया (११) रूपिया

दिमागी कसरत

बैंगन, करेला, मिर्च, भिण्डी, लौकी, मूली, टमाटर, प्याज, पत्तागोभी, गाजर।

बताओ कौन है छोटे से बड़ा

७, ३, ४, १०, २, ८, ५, १, ६, ९

दिमागी कसरत

क्या आप बता सकते हैं कि नीचे दी गई संख्याओं से किन शहरों के साथ टेलीफोन सम्पर्क किया जा सकता है। संख्या के प्रत्येक अंक के लिये दो संभावित अक्षर दिये गये हैं जिनमें सिर्फ एक सही है।

किसका जैसा ?

चित्र 'क' को ऊपर से देखने पर यह बाकी चित्रों में से किसका जैसा दिखेगा ?

'क'

ये विश्व-प्रसिद्ध पुस्तकें किन ख्याति-प्राप्त लेखकों की हैं ?

1 ब्रोकेन विंग्स
4 कैदी
क बंकिमचन्द्र
6 लिपिका
5 साकेत
ग सरोजिनी नायडू
ख मुल्कराज आनन्द
2 आनंदमठ
घ अमृता प्रीतम
छ रवीन्द्रनाथ टैगोर
ज मैथिलीशरण गुप्त
3 कागज़ ते कैनवस

आइवर यूशिएल

उत्तर- (१) लखनऊ, अहमदनगर, मगहर, कटक (२) ३
(३) १-ग, २-क, ३-घ, ४-ख, ५-ज, ६-छ,

सूर्या फाउण्डेशन

बी- 3/330, पश्चिम विहार, नई दिल्ली - 110063

Tel.: 011-25262994,25253681 Email: suryafnd@gmail.com Website: www.suryafoundation.net.in

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना। संघ संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रूचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम तरूणों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न categories में Cadres का इंटरव्यू होगा-

1.Engineers (IIT, NIT और Regional Engineering Colleges), CA, MBA, (IT/Finance), MCA

आयु 20-23 वर्ष। वर्ष 2016 में Final Year परीक्षा देने वाले भी आवेदन कर सकते हैं। सूर्या साधना स्थली झिंझौली में 3 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के पश्चात 1 वर्ष की On Job Training (OJT) / Practical & Campus Training (PCT) होगी जिसके बाद पोस्टिंग दी जायेगी। वेतन व stipend निम्न प्रकार होगा

		Initial Training & OJT / PCT	After Training (CTC)
CA		50,000	As Per performance
Engineer	B.Tech. (IIT)	50,000	- do -
	B.Tech. (NIT)	35,000	- do -
	B.Tech. (REC)	20,000 - 25,000	- do -
MCA		20,000 - 25,000	- do -
MBA		15,000 - 25000	- do -

2. Graduate Management Trainee (GMT)

योग्यता- 2016 में 10वीं या 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों। **आयु:** 18 वर्ष से कम। सूर्या साधना स्थली झिंझौली में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद OJT/ PCT में भेजा जायेगा। OJT/ PCT के साथ-साथ ग्रेजुएशन और MBA/ MCA करने की सुविधा दी जायेगी। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा फ्री रहेगी। साथ ही 3000/- प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगा। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ-साथ 11वीं में 6000/- और 12वीं में 7000/-Graduation 1st Year में 9000/-, II nd Year में 10500/-, III rd Year में 15000/-, MBA/MCA 1st Year में 15000/- MBA/ MCA II nd में 20000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA/ MCA पूरा होने के बाद 30000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

3. Assistant Staff Cadre (ASC)

योग्यता- 2016 में 10वीं या 11वीं या 12वीं की परीक्षा देने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 55% एवं गणित में 60% अंक प्राप्त किए हों। आयु: 18 वर्ष से कम। सूर्या साधना स्थली झिंझौली में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद OJT/ PCT में भेजा जायेगा। प्रारंभिक 6 महिने की ट्रेनिंग के दौरान 3000/- प्रतिमाह Stipend मिलेगा तथा फ्री भोजन और रहने की व्यवस्था होगी। तीन वर्ष की OJT/ PCT के दौरान Stipend - 1st year: 6000/- प्रतिमाह व आवास, II nd year: 7000/- प्रतिमाह व आवास, 3rd Year : 8000/- प्रतिमाह व आवास। After training 11000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

(आवेदन पत्र अलग कागज पर हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें)

Affix latest Photograph here

पूरा नाम..... जन्मतिथि (अंकों में)..... पिता का नाम..... पिता का व्यवसाय.....मासिक आय..... भाई कितने हैं (आप को छोड़कर) ..... बहनें कितनी हैं ..... जाति..... वर्ग..... विवाहित / अविवाहित ..... पढ़ाई का विवरण (Mark Sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें)..... पत्र व्यवहार का पता.....पिन कोड..... टेलीफोन नं.....मो.....ई-मेल.....

NCC/NSS/OTC/ITC/ शीत शिविर/PDC(कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें).....शिविर में दायित्व सेवा भारती/ विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय/ छात्रावास या संघ या परिषद् अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे..... दायित्व..... सूर्या परिवार में कोई परिचित है तो! नाम एवं विभाग..... सूर्या फाउण्डेशन के इण्टरव्यू में पहले भाग ले चुके हैं तो वर्ष तथा कैडर का नाम.....

अपनी विशेष क्षमता, योग्यता, गुण एवं उपलब्धि अवश्य लिखें। इसके अतिरिक्त अपने विषय में कोई अन्य जानकारी देना चाहें तो अलग पेज पर लिखकर भेजें।

कृपया विस्तारपूर्वक बॉयोडाटा के साथ निम्न पते पर आवेदन करें। Category 1 के आवेदनकर्ता इसके अतिरिक्त अपना detailed CV **भी साथ में भेजें।**

विज्ञापन छपने के एक माह के अंदर आवेदन करें

।। समाचार।।

महिलाएं प्रारंभ से ही सशक्तः श्री अष्ठाना

इन्दौर। शैशविका विद्यालय में आयोजित 'सशक्त महिला : सशक्त समाज' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में महिला सशक्तीकरण विषय पर श्री कृष्णकुमार अष्ठाना (संपादक देवपुत्र) व श्री विपिन माहेश्वरी (एडीजी, इन्दौर) ने महत्वपूर्ण उद्‌बोधन दिए। सरदार अजीत सिंह नारंग एवं समाजसेवी बाबू भाई महिदपुरवाला ने भी सभा को संबोधित किया।

इस अवसर पर वरिष्ठ चित्रकार शेख रियाजुद्दीन पटेल द्वारा प्रदर्शित चित्रकला प्रदर्शनी में भगवान शिव के सहस्ररूप दर्शन से दर्शक मंत्रमुग्ध हुए।

देवपुत्र सम्मानित

इन्दौर। अ.भा. साहित्य परिषद् एवं शा. माता जीजाबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इन्दौर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में भारत और अन्य कई देशों से आए प्रतिनिधियों के मध्य देवपुत्र का बहुमान हुआ।

एक सत्र में देवपुत्र के प्रधान संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना को विशेष सम्मान प्रदान किया गया वहीं एक अन्य सत्र में देवपुत्र के प्रबंध सम्पादक डॉ. विकास दवे एवं कार्यकारी संपादक श्री गोपाल माहेश्वरी को भी सम्मान प्रदान किया गया।

इस अवसर पर बिरला फाउण्डेशन दिल्ली के निदेशक डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण, देवी अहिल्या वि.वि. के कुलपति डॉ. आशुतोष मिश्र, पूर्व कुलपति डॉ. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। यह जानकारी संगोष्ठी संयोजक डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव ने दी।

बाल प्रस्तुति

बारिश

कविता : निकिता परमार

बारिश की बूंदे अमृत सी,
जैसे ईश्वर का आशीष।
टप-टप-टप-टप बूँदे गिरती,
अच्छी लगती है बारिश।
बारिश में हरियाली छाती
सबके मन को भाती है।
वर्षा की बूँदें जब गिरती,
मन को वो हर्षाती हैं।
फूल खिले तितलियाँ भी नाचे,
भौरों का गुन-गुन गायन।
पंछी दल भर राह उड़ानें,
पशुओं का भी खुश है मन।
काली-काली घटा है छाई,
भरा हुआ है नील गगन।
टप-टप टपकी बूंदें ठंडी,
इन्द्रधनुष देता दर्शन।
दादुर गाए मोर भी नाचे,
बिजली चमके चम-चम-चम।
बूँदों की पायल पहना दो,
बहना नाचे छम-छम-छम।

● नागदा (म.प्र.)

डॉ. विकास दवे का मनोनयन

देवपुत्र के प्रबंध संपादक डॉ. विकास दवे भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के राजभाषा विभाग की ओर से हिन्दी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य मनोनीत हुए हैं। देवपुत्र परिवार के लिए यह गौरव एवं आनन्द का विषय है। ज्ञातव्य है कि इस समिति में लोकसभा एवं राज्यसभा के दो-दो सांसद, संसदीय राज्यभाषा समिति व केन्द्रिय सचिवालय के दो-दो मुख्य सचिवों के अतिरिक्त हिन्दी के लिए समाज में काम करने वाले ४ वरेण्य विद्वानों का चयन होता है। डॉ. दवे के अतिरिक्त इस श्रेणी में डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल, डॉ. श्रीराम परिहार एवं सुश्री क्रांति कनाटे मनोनीत हुए हैं।

श्रद्धांजलिः प्रथम पुण्यतिथि पर

जागती आँखों वाले स्वप्न दृष्टा को

गोपाल माहेश्वरी

२७ जुलाई २०१५ की शाम भारत माता का एक महान सपूत उसकी गोद में सदा के लिए सो जाने के लिए हमसे विदा ले गया। विश्व ने एक महान वैज्ञानिक को खोया, देश अपने पूर्व राष्ट्रपति को पर करोड़ों बच्चों से तो उनके प्यारे 'काका कलाम' का बिछोह था यह।

कैसे कोई साधारण से बहुत कम पढ़े लिखे परिवार में जन्म लेकर बचपन में अखबार बाँटने वाला एक बच्चा अपने जीवन में ऐसी ऊँचाई छू लेता है कि सारे संसार के अखबार उसकी मृत्यु को प्रमुख खबर बनाते हैं। प्रो. अबुल पकीर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम ने यह कर दिखाया। वास्तव में उनका जीवन, समाज के अंतिम व्यक्ति के राष्ट्र का प्रथम नागरिक बनने की कहानी है। वे १५ अक्टूबर १९३१ को पवित्र रामेश्वरम् धाम की माटी में जन्मे, पले, बढ़े और समुद्र सा विशाल और अगाध व्यक्तित्व ग्रहण करते गए। न अभाव उनकी रुकावट बने न गरीबी उनकी बेड़ियाँ । बचपन में उनकी नन्ही तेजस्वी आँखों ने जो स्वप्न देखा वह निरंतर बड़े से और बड़ा होते हुए इतना बड़ा हो गया कि सारे भारत को विकसित राष्ट्रों की प्रथम पंक्ति में अपने दम पर खड़ा देखने लगा और वे उसे साकार करने में न केवल स्वयं जुटे बल्कि उन्होंने आप जैसे बच्चों और युवा होते तरुणों की करोड़ों आँखों में वही स्वप्न बाँट दिया। 'तेजस्वी मन' 'भारत २०२० भारत के निर्माण की रूपरेखा' और 'अग्नि की उड़ान' केवल उनकी किताबों के नाम नहीं है बल्कि मुझे लगता है यह तो डॉ. कलाम के ही दूसरे नाम हैं। क्योंकि केवल लेखक नहीं, सर्जक थे वे। रक्षा वैज्ञानिक के रूप में रक्षक भी थे और शिक्षा मनीषी के रूप में शिक्षक भी। उनके अन्दर एक महामानव बसता था। वे गीता को पढ़ते ही नहीं जीते थे। उनके मस्तिष्क

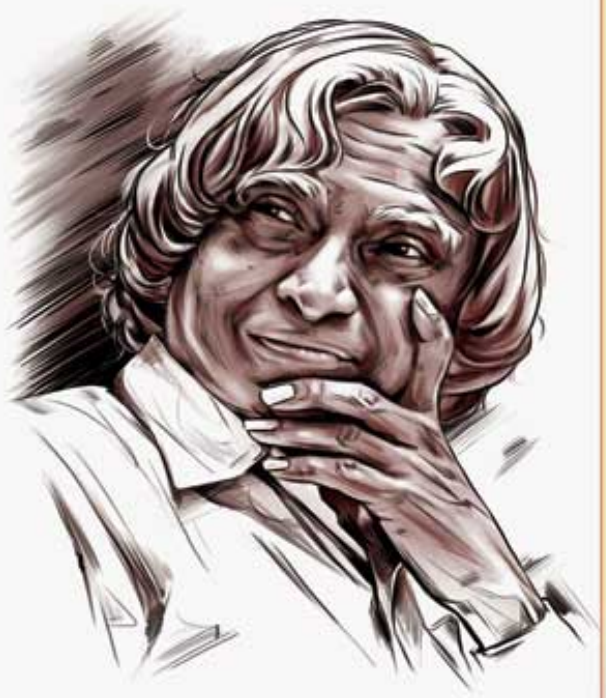

में विज्ञान था तो हृदय में कला उनमें सदैव एक सच्चे मानव को गढ़ते रहती थी। राष्ट्रभक्ति उनकी रगों में रक्त बनकर बसी थी। अपने चिंतन से वे भावी पीढ़ी को स्वप्न दे गए तो वर्तमान पीढ़ी को अभय।

अपने इस मिसाइल मेन को भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' 'पद्म विभूषण' और 'भारत रत्न' देकर इन सम्मानों की ही गरिमा बढ़ाई है। वे कहते थे ''मैं शिक्षक हूं और इसी रूप में पहचाना जाना चाहता हूँ।'' और सचमुच अपनी अंतिम श्वासें लेते समय वे विद्यार्थियों के बीच ही तो थे एक शिक्षक के रूप में।

भारत माँ के इस सच्चे सपूत को इस प्रथम पुण्यतिथि पर सच्ची श्रद्धांजली भारत माँ का सच्चा सपूत बनकर ही दी जा सकती है। वे तुम्हारी आँखों में आँसू नहीं स्वप्न देखना चाहते थे। अपने पूर्ण विकसित राष्ट्र का स्वप्न और इसीलिए वे नहीं चाहते थे कि यह सपना पूरा करने तक तुम छुट्टी मनाओ, अपना लक्ष्य छोड़कर उनकी अंतिम बिदाई के दिन भी।

छटा बालनाट्य समारोह गहरी छाप के साथ सम्पन्न

४१ नाटक, ५०० बच्चे, ३ दिन, खचाखच भरी दर्शक दीर्घा

चित्रमय झलकियां...

इन्दौर। संस्था मुक्त संवाद एवं देवपुत्र व तरुण मंच के सहयोग से आयोजित छटा बाल नाट्य समारोह दर्शकों के मनों पर अपनी छाप और गहराते हुए सम्पन्न हुआ।

समारोह के प्रथम दिवस के मुख्य अतिथि थे प्रख्यात अभिनेता निर्देशक एवं संगीतकार शेखर सेन। संगीत नाटक अकादमी दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शेखर सेन ने बताया कि वे स्वयं ५ वर्ष की अवस्था में मंच पर प्रोत्साहित हुए थे और वे आज इस क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बना पाए हैं।

हिन्दी के २४ एवं मराठी के १७ बाल नाटकों की तीन दिनों में सम्पन्न रसपूर्ण रंग प्रस्तुतियाँ प्रशंसनीय रहीं। कुछ नाटकों में तो केवल ५ वर्ष तक के बच्चों ने ही अभिनय किया।

समारोह के समापन सत्र को लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन, बाल संरक्षण अधिकार आयोग के अध्यक्ष डॉ. राघवेन्द्र शर्मा, महापौर श्रीमती मालिनी गौड़ एवं जिलाधीश श्री पी. नरहरि ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर देवपुत्र के प्रधान संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना एवं मुक्त संवाद के श्री मोहन रेडगांवकर विशेष रूप से मंचासीन थे। प्रख्यात रंगकर्मी श्री श्रीराम जोग(इन्दौर) एवं श्री सतीश मेहता (भोपाल) का विशिष्ट सम्मान भी इस अवसर पर सम्पन्न हुआ। साथ ही स्मारिका 'बालरंग' भी लोकार्पित की गई। आभार श्री मदन बोवड़े ने माना।

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

• संस्थानों/विद्यालयों के लिए १० से अधिक अंक की सामूहिक सदस्यता हेतु वार्षिक सदस्यता	११०/-
• एक अंक	१५/-
• वार्षिक सदस्यता	१५०/-
• त्रैवार्षिक सदस्यता	४००/-
• पंचवार्षिक सदस्यता	६००/-
• आजीवन सदस्यता	११००/-

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना